श्रीमान लाल जी

11825

श्री सतगुरु कृपा प्रकाश ग्रन्थान्तर

* श्री *

उपासना पञ्चरत्न ।

अर्थात्

सियारामनाम महिमा दृष्टान्तावली १ श्री सत
गुरुशब्द यथार्थ ज्ञान २ श्री गुरु पदार्थ
प्रबोधिका ३ श्री सीथप्रसादी माहा
त्म्य ४ श्री अनन्यसतक ५

जिसको ।

जयसियराम जयजय सियरामनाम ध्वनिप्रचारक
श्री वैष्णव धर्म्मावलम्बी परमहंस श्री १०८ श्री
सियालाल शरणजी महाराज उपनाम 'श्री
प्रेमलता जू' ने निर्म्माण किया ।

उसीको ।

सिया रघुनाथ शरण ने लिखकर

मैनेजर—महेश प्रसाद द्वारा—
सत्यनाम प्रेस, मैदागिन, बनारस सिटी में
छपाकर प्रकाशित किया

वाल्मीकि शोध संस्थान
11825
अयोध्या
दास छावनी सेवा ट्रस्ट

भूमिका ।

श्री सतगुर वे नमः

सर्व सज्जनों को विदित हो कि इस उपासना पञ्च-रत्नग्रन्थमें श्रीसियाराम नामदृष्टान्तावली, केपश्चात् त्र्यगुरु सिद्धान्त वर्णन किया गयाहै, प्रथम गुरुत्र्या जो परमात्मा परब्रह्म श्री सीताराम जी की सेवा सुमिरन भजनादि से विमुख, केवल कर्मकाएड तथा रुक्ष भक्ति रस रहित ज्ञानाश्रित हो निराकार निर्गुन ब्रह्म का प्रतिपादन करि करि जीवों को भ्रमाय जमीन का न त्र्यासमानका कहीं का नहीं रहने देते, त्र्यापगये त्र्यरु त्र्यानहिं घालहिं, मूर्ति पूजा सन्त सेवा शास्त्रोक्तकल्यान कारक सिद्धान्तों को खएडन करि पापों के पात्र होतेहैं, उनके बचनत्र्याचरनइसमेंलिखेहैं, पुनः श्रीगुरु जोश्रीसीताराम जी महाराज की विमल भक्ति संसारामय नाशक का

उपदेश करि जीवों को तन मन धन से प्रभु में लगाय कृतार्थ करि रहे हैं, तीसरे श्री सतगुरु जो सर्व उपाधि रहित सब ते श्रेष्ठ सर्वसुख सर्वगुण सर्व समर्थार्णव सब जीवोंको सर्व ठिकाने सर्व कालमेंसर्व शङ्का रहित सर्व बिधि सुलभ सर्व साधन साधकों से उत्तमोत्तम गति मति रति दायक श्री सियाराम नामका उपदेश देने वालों के, तथा श्री सीथ प्रसादी माहात्म्य ज्ञातन के, औ श्री अनन्य सतक में अनन्य भाविकों के, विलग विलग बचन लिखे गये हैं सो सर्वसज्जन गुण ग्राही विचार पूर्वक आदि अन्त तकपढ़ेंगे सुनेंगे समुझैंगे बारबार, ते अवश्यभव वन्धन तेछुटि श्री सीतारामजू महाराज के समीप श्री साकेत धाम में सुन्दर निवास पावेंगे ।

॥ इति भूमिका ॥

भवदीय-सियालाल शरण

सन्त सज्जनों प्रति प्रार्थना ।

दोहा

नहिं कबि पंडित सन्त मैं, सब गुण रहित अबोध ।
तेहि कर बानी वाल सम, सुनि न करिय कोउ क्रोध।१।

वार्ता ।

बाल पने तेही विद्या बुद्धि सर्वोपाय हींन सन्तनि के शरण में आय श्री सियाराम नाम रटि २ श्री हनूमान जी को सुनाने लगा, उन्हीं की कृपा से कुछ बड़े होने पर लिखना पढ़ना आगया, नाना प्रकार के आसय भासने लगे, येढ़ टेढ़ कविताई भी करने लगा, एक श्री सतगुरु कृपा प्रकाश नामक बड़ा भारी ग्रंथै तैयार हो गया, उसीमेंसे सज्जन लोगों ने निज २ ब्यय से प्रेमलता

पदावली १ उपासना रहस्य २ उपासना पंचरत्न ३ नाम खोड़सी ४ प्रेमलता वाराखरी ५ श्री गुरु महिमा ६ संकट मोचन हनूमानाष्टक ७ श्री जानकी जी की बधाई ८श्री नाम जापक महत्व९ चैतन्य चालीशा१० इत्यादि छोटे बड़े दश वारहप्रकर्ण छपाय२बाँट दियेगये ये सब अञ्जनी नन्दनजीकी कृपाहै,इसलियेजो कुछ मेरे से लिखनेमें भाव विरुद्ध गलती हा गई हो,सो छमाकर सज्जन सुधारि लेंगे, क्योंकि हजारों शब्द लिखने में एक रस सावधानता नहीं रहती, बहुत से भाव छप जाने पर अभाव से भासने लगते हैं, लिखते हैं कुछ लिखाय जाता है कुछ, कृपा काब्य का येही हिसाब है, प्रभु के कृपा पात्रों को यह भेद विदित है, मेरा यह सि-द्धान्त नहीं, कि किसी प्राणीकी आत्मा दुखीकरूँ सब कोई का हितही चाहता हूँ, सब कोई सुखी होयँ इसी आशापर उलटी पुलटी बातें लिखाय जातीं हैं,

तोपीछेसे सुधार दी जातीं हैं, जो छपकर निकलगईं हैं सो मेरी अनुचितें सन्त सज्जन क्षमा करैं, क्योंकि, सन्त हंस गुन गहहिं पय परिहरि वारि बिकार।

इति प्रार्थना ॥

आपका सियालाल शरण

निम्नलिखित पुस्तकों का पता–

सेठ।

छोटेलाल लक्ष्मीचन्द बुकसेलर,

श्री अयोध्याजी।

जय सियराम जयजय सियराम।
जय सियराम जयजय सियराम।
जय सियराम जयजय सियराम।
जय सियराम जयजय सियराम।

रमहंस श्री १०८ श्रीसियालालशरणजी महाराज उपनाम 'श्रीप्रेमलता जू

अथ

श्री नाम महिमा दृष्टान्तावली ।

श्री बल कवि जी

श्रीगुरुवे नमः। श्रीसियाराम नामाभ्यां नमः। श्रीहनुमते नमः

दोहा ।

वन्दि सु गुरुपद पद्म सिय, राम नाम गुण धाम ।
सह दृष्टान्त सु नाम की, महिमा लिखौं ललाम ॥
पोथी पढ़ि २ जन मुये, भये न प्रभु अनुकूल ।
नाम तत्वजान्यों नहीं, प्रेमलता सुखमूल ॥ १ ॥
लिखत पढ़त सब सुनत नित, पोथिनि करि अभिमान।
प्रेमलता जानत नहीं, नामतत्व अग्यान ॥ २ ॥
दरशन लगि बहुजात जिमि, देवल में करि नेम ।
प्रेमलता इतउत उझकि, फिरत जनाय सु प्रेम ॥३॥
बसन रङ्ग भूषण कवन, प्रभु अँगढँग शृंगार ।
प्रेमलता बूझिय तिन्हैं, कवन सुमन गर हार ॥४॥

कहिहैं कोइ यक सहस में, जिन्हि निरखी मनलाय।
प्रेमलता नखशिख सुछबि, निज प्रभु की भरिभाय॥५॥
यहिबिधि नाम परत्व कोउ, जानत सुगुरु प्रसाद।
प्रेमलता पढ़ि २ अपर, मरत मूढ़ बकि बाद॥६॥
नाम तत्व ग्याता कहूँ, कोउ कोउ पैयत सन्त।
प्रेमलता सु मराल इव, केकी काक अनन्त॥७॥
नाम परत्व सु अगम अति, जीवनि जिमि अभिमूर।
प्रेमलता बहुबाद बिष, बकि भखि मरियत कूर॥८॥
नामतत्व मुक्ता सु पय, सन्त हन्स सबिचार।
प्रेमलता संग्रहहिं ताजि, घोंघा नीर बिकार॥९॥
नाम परत्व न लगहिं भल, तिनहिं जिनहिं बिधिबाम।
प्रेमलता जिमि उलुकहीं, भावत नहिं रबिघाम॥१०॥
सुख न नपुंसक लहहिं बरु, रमे अप्सरानि सङ्ग।
प्रेमलता तिमि नामबिनु, अगम रामरस रङ्ग॥११॥
खर कूकर मूकर सरिस, पापिन के मुख मन्द।
प्रेमलता श्री नाम बिनु, मलिन दिवस ज्यों चन्द॥१२॥

सन्तनि के मुख बिमल नभ, रति निशि शरद अदोष।
प्रेमलता श्री नाम शशि, सोहत करुणा कोष ॥१३॥
यद्यपि नाम परत्व बहु, पोथिनि में बिख्यात।
प्रेमलता गुरु ग्यान बिनु, निगुरानि नाहिं लखात॥१४॥
अधमनि के मुख आव जो, अधम उधारण नाम।
प्रेमलता तरि जाँयँ भव, पावैं सियपिय धाम॥१५॥
नामतत्व अतिशय अगम, गुरु बिनु गावहिं सन्त।
प्रेमलता जिमि मसकहीं, दुर्लभ सागर अन्त॥१६॥
नामतत्व बिनु रटन कोउ, पावै प्रेमलतान।
परतिय गामी पुरुषजिमि, लहहिं न पद निर्बान॥१७॥
नामरटे बिनु सुख चहहीं, साधन करि कलिकाल।
प्रेमलता ते सेव जनु, सेमर तजि सु रसाल॥१८॥
नाम तत्व जानै नहीं, पंडित जगत कहाय।
प्रेमलताते दिवस जिमि, दीपक मलिन लखाय।१९।
नाम रटै वैराग बिनु, प्रेमलता बसि गेह।
ते जनु खेती कूपकी, बानर को अस्नेह॥२०॥

सतगुरु बिमल बिवेक बिनु, नाम रटै जो कोय।
ते उदार जन धन सु जिमि, प्रेमलता दिन दोय॥२१॥
नाम तत्व लहि सु गुरु सन, रटत सदा इकतार।
प्रेमलता ते अचल जिमि, साधु धर्म संसार॥२२॥
नाम रटत अलसात जे, रत मद विषय बिकार।
प्रेमलता तजिये तिन्हैं, जिमि चातक जल खार॥२३॥
नाम प्रतीति बिहीन जो, सुर नर मुनि कोउ संत।
प्रेमलता तजि तिनहिं जिमि, बिनु गथ गणिका कंत२४
नाम रटत नाशत सकल, प्रेमलता परपञ्च॥
बढ़त गङ्ग दोउ कूल जिमि, करकट रहत न रञ्च॥२५॥
नाम शनेहिनि निरखि यम, दूत भूत घबराय।
प्रेमलता भजि जात जिमि, गज गण सिंहै पाय॥२६॥
नाम रटत मिलिहहिं अवसि, प्रेमलता सियराम।
सनइ२ चालि पथिक जिमि, करि आवत चहुँधाम।२७
पढ़े बड़े पंडित बने, नाम हींन रत मोह।
प्रेमलता ते पुरुष जिमि, भार लद्यो खर सोह॥२८॥

सब गुण गण पण्डित चतुर, मति सु नाम रति हीन।
प्रेमलता ते सोह जिमि, पट बिनु नारि नवीन ॥२९॥
रटत न नामहि गेह तजि, बनि योगी अवधूत।
प्रेमलता ते पुरुष जिमि, जग गणिका को पूत ॥३०॥
साधु कहाइ न रटत जो, नाम सु तजि जग गेह।
प्रेमलता ते भयेउ जिमि, ऊषर बरष्यो मेह ॥३१॥
नाम रटे बिनु थोथ सब, गुण बिद्या सुख ठाठ।
प्रेमलता भल लखत जिमि, घुनौं भीतरौ काठ ॥३२॥
नाम रटे बिनु कर्म कलि, जप तप तीरथ धाम।
प्रेमलता सब लखब जिमि, ठगके झूठे दाम ॥३३॥
नाम तत्व जाने बिना, प्रेमलता बहु बेद।
पढ़े कीर जिमि थीर मन, भयो न नाश्यो खेद ॥३४॥
नाम नेह बिनु बादि सब, ग्यान ध्यान अनुराग।
प्रेमलता तिहुँ काल जिमि, बाजीगर को बाग ॥३५॥
शुचि सुन्दरता चतुरता, सिद्धाई बिनु नाम।
प्रेमलता अति फीक सब जिमि जग नकटी बाम।३६।

नाम रटत अवगुणहु गुण, होत सु दुख सुखदाय।
प्रेमलता जिमि कुजल मिलि, गंगहिं गंग लखाय॥३७॥
सुनत सुनावत नाम जन, रामरूप ह्वै जात।
कीट भृंग के न्याय जिमि, प्रेमलता बिख्यात॥३८॥
नामतत्व लखि परत जब, नाशत सकल बिकार।
प्रेमलता रबि उदय जिमि, रजनी केर अँधार॥३९॥
नाम रटत लय लाय तेहि. जनपर प्रभु अति प्यार।
करत मातु जिमि पुत्रकी, प्रेमलता सु सम्हार॥४०॥
नाम तत्व लहिं अचल मन, सब बिधि होत सुखैन।
प्रेमलता बर बरि सु जिमि, दुलहिनि पावत चैन॥४१॥
नाम रटत साधन करत, गति हित तेहि मति कूर।
प्रेमलता अमि अशन पर, जिमि कोउ फाँके धूर।४२।
नाम रटन तजि निरत बहु, साधन करि गति आश।
प्रेमलता मृगनीर जिमि, पी नाश्यो चह प्यास॥४३॥
नाम रटन जो करत तेहि, समता योग न कोय।
प्रेमलता अनुपम सु जिमि, सिय रघुनन्दन दोय।४४।

नाम रटन आधार जेहि, तेहि कर रुख सियराम।
प्रेमलता जुगवत रहत, विषयी जिमि बर बाम ॥४५॥
नामरटन जेहि प्रिय लगै, तेहि पर श्री सियराम।
प्रेमलता रीझत सु जिमि, तिय लखि पुरुष ललाम।४६।
नामतत्व जेहि लखि पर्‌यो, भर्‌यो तासु उर मोद।
प्रेमलता सुख सोव जिमि, बाल सु जननी गोद।४७।
नामतत्व लहि सन्त महि, अटत रटत जित मीच।
प्रेमलता भय विगत जिमि, पञ्चानन बन बीच ॥४८॥
नाम शनेहिनि के निकट, सब सुख आवत धाय।
प्रेमलताबिनुयतनजिमि, जलजलनिधिमहँजाय।४९।
नाम रटत दुर्वासना, याचकता जरि जाय।
प्रेमलता बिनु आग जिमि, ग्रीषम घास नसाय।५०।
नामरटन में सकल सुख, भेर न जानत कोय।
प्रेमलता जिमिरतन महँ, ऋधि सिधि रहेउ सुगोय॥५१।
नाम रटत उर खिलत जिमि, रविहिं निरखि जलजात।
राम भ्रमर गुञ्जत सु लहि, प्रेमलता कुशिलात।५२।

नाम रटन बिनु बादि बहु, जप तप साधन नेम।
प्रेमलता जिमि राखमें, हवन किये नहिं छेम॥५३॥
नाम रटन भावत जिन्हें, तिन्ह सँग श्री हनुमन्त।
प्रेमलता परिछाँहिं जिमि, रहत कहत शुचि संत॥५४॥
नाम रटनियाँ सन्त शुचि, कहुँ कहुँ पाये जात।
प्रेमलता जिमि काक बक, बिपुल न हंस लखात॥५५॥
नाम शनेही सन्त जहँ, निवसत धन्य सु देश।
प्रेमलता सुर सरित जिमि, निर्मल शमन कलेश॥५६॥
नाम रटन आवेश जब, चढ़त बढ़त गुण ग्यान।
प्रेमलता जिमि लहि सु जल, निपजै सुन्दर धान्न।५७।
नाम शनेही रटत जब, नाम सु सहित शनेह।
बरषत तब जनु सावनी, प्रेमलता घन मेह॥ ५८॥
नाम रटे बिनु जीव कलि, ह्वै हैं अति दुख दीन।
प्रेमलता जिमि नीर बिनु, तलफि तजै तनु मीन॥५९॥
नाम शनेही जनन कर, मति अति गहर गँभीर।
प्रेमलता सत शिन्धु जिमि, थाहि सकै को वीर॥६०॥

नामानन्य समर्थ जग, सब बिधि जिमि सियराम ।
प्रेमलता तिन्हि के चरण, हरण घोर भव घाम ॥६१॥
नाम रटहिं रटवावहीं, सुनिहरषहिं जो लोग ।
प्रेमलता ते मिलत कहुँ, कलियुग जिमि जपयोग ।६२।
नाम रटत पुलकात उर, रोवत होइ अचेत ।
प्रेमलता कोउ एक अस, जिमि केशर को खेत ॥ ६३ ॥
नाम रटन लयलीन अति, नित घी चीनी खाहिं ।
प्रेमलता निर्लेप जिमि, पद्म पत्र जल माहिं ॥६४॥
नाम रटन मन क्रम बचन, दृढ़ पै बसत कुसङ्ग ।
प्रेमलता फणि मणिसुजिमि,गहहिंनतिन्हकोरङ्ग॥६५॥
नाम रटन रस पतित नर, लहहिं न जे रत बाद ।
प्रेमलता बिनु जीभ जिमि, दुर्लभ भोजन स्वाद॥६६॥
नाम अमल चढ़ि जात जब, उतरत कबहुँ न फेरि ।
प्रेमलता रण शूर जिमि, सर सुसती कहुँ गेरि ॥ ६७ ॥
नाम रटन रस अनुपम, सकल रसन शिर मौर ।
प्रेमलता चाखत सुजन, जिमि मधुमाखी भौर ॥६८॥

नाम सुरङ्ग बिचित्र अति, बरणि कवन बिधि जाय।
प्रेमलता जिमि कोकिगर. निरखतही सुखदाय ॥६९॥
नाम रंग महँ रँगेउ जे, तिन्ह पर दूजो रङ्ग।
प्रेमलता नाहिंन चढ़ै, कादर नर जिमि जङ्ग ॥७०॥
नाम रटन बहुतक करत, जग प्रसिद्ध कोउ होत।
प्रेमलता नभनखत जिमि, लखि बड़ छोट उजोत ॥७१॥
नाम रटन दृढसन्त कोउ, बिरले रत पर हेत।
प्रेमलता श्रीखन्ड जिमि, सब कहँ सम सुख देत ॥७२॥
नाम रटत चढ़ि गोपुरनि, गर्जत करि करि सोर।
प्रेमलता सुख लहहिं जन, जिमि घन धुनिसुनि मोर ७३
नाम रटत रटवावत, गर्जत लगत न लाज।
प्रेमलता भय रहित जिमि, गणिका बणिक समाज।७४॥
नाम रटनियन निकट नहिं, आवत पापी लोग।
प्रेमलता सँयामिनि ढिग, जिमि न जात बहु रोग..७५॥
नामशनेही जनन लखि, दुर्जन होत उदास।
प्रेमलता पावस ऋतुहिं, रहि जिमि अर्क जवास।।७६॥

नामसु जापक सन्तनि, हेरि अधम मुरझात ।
प्रेमलता लजवन्ति जिमि, लरी छुवत कुम्हिलात॥७७॥
नामसुजापक आगमन, सुनि खल गण जरिजात।
प्रेमलता फल प्रगट जिमि, होतहिं फूल सुखात ॥७८॥
नाम शब्द सुनि श्रवण खल, करहिं सु मलिन कुतर्क।
प्रेमलता तजि तिनहिं जिमि,पावस पातनि अर्क॥७९॥
नाम सुमहिमा सुनहिं सठ, हठ करि करहिं न कान ।
प्रेमलता ते जियत जग, जिमि खर सूकर स्वान ॥८०॥
नामरटन सुनि जरत जे, करत तर्क कटु बात ।
प्रेमलता ते काग जिमि,जियत जगत गुहखात ।८१॥
नाम सु महिमा श्रवण सुनि, रटहिं न जे अज्ञान ।
प्रेमलता ते अधम जग, जीवत मृतक समान॥८२॥
नाम रटन महिमा कहत, रटत न निज मन मारि ।
प्रेमलता ते जीव जिमि, नामर्दा की नारि ॥ ८३ ॥
नामहिं रटत न थकहिं जे, तिनहिं राम सिय आय ।
प्रेमलता मिलिहहिं अवासि, जिमि गोबछरहिं धाय ।८४।

नाम जापकन देत जो, दुख तेहि हनुमतलाल ।
प्रेमलता नाशहिं सजर, जिमि गज पंकजनाल ॥८५॥
नाम जापकन दुखइ नर, आपहिं जरि मरि जात ।
प्रेमलता हिम ऋतु लगत, जिमि पुरइनि के पात॥८६॥
नाम जापकन की अगम, महिमा अमल अपार ।
प्रेमलता दुख दमन जिमि, गंग तरङ्ग उदार ॥ ८७ ॥
नाम रटत रटवावहीं, औरनि ते तजि लाज ।
प्रेमलता जग जलधि बिच, ते जिमि नवल जहाज ।८८।
नाम रटत हरषात उर, चिन्तहिं जे प्रभु रूप ।
प्रेमलता जग जनन बिच, राजहिं ते जिमि भूप ॥८९॥
नाम रटत नहिं हटत जे, काहुइ ते बलवान ।
प्रेमलता ते जन जगत, प्रगट सु जिमि हनुमान ।९०।
नाम रटत निर्भय अटत, अवनि भरे अहलाद ।
प्रेमलता तेइ कालि सु जिमि, ध्रुव पहलाद अबाद ।९१।
नाम रटन में प्रीति अति, नीति निपुण गत द्रोह ।
प्रेमलता तेइ नारद जिमि, सनकादिक निर्मोह ।।९२॥

नाम रटत प्रतिस्वास सत, छमा शील गत क्लेश।
प्रेमलता ते लोक हित, प्रगट भयेउ जिमि शेष।
नाम निरन्तर रटत जे, गृह बसि कुटुम समेत।
प्रेमलता प्रभु चरित रत, ते जन जिमि बृषकेत॥९४॥
नाम रटन तेहि नहिं रुचै, जेहि उर पाप निवास।
प्रेमलता जिमि ज्वर अछत, अमी अशन हूँ घास।९५।
नाम रटन में रुचि बढै, जब जग लागै रूख।
प्रेमलता जिमि ज्वर हटत, रोगिहिं बाढ़ै भूख.॥९६॥
नाम रटन महँ भेरउ सब, ऋधि शिधि सियबर खेल।
प्रेमलता प्रगटत सु जिमि, यतन किये तिलतेल।९७।
नाम रटन रमि जातजेहि, जग सुख बिसरहिं आप।
प्रेमलता पति घर सु लहि, जिमि तिय जननीबाप।९८।
नाम रटत उड़ि जात दुख, दारुण सहित समाज।
प्रेमलता पारावत, जिमि लखि आवत बाज॥९९॥
नाम रटत बाढत भगति, सियबर की उर खूब।
प्रेमलता तिहुँ काल ज्यों, इक रस रह जिमि दूब।१००।

नाम रटन में स्वाद जस, मुख ते किमि कहि जात।
प्रेमलता अतिरुचिगर सु, जिमि मिथिलाको भात १०१
नाम जापकनि देत नहिं, प्रभु जो बस्तु बिकार।
प्रेमलता रोगिनिहिं जिमि, बैद्य सु अपच अहार।१०२।
नाम रटन मन हरण जिमि, मिथिलामहि सुखदाइ।
प्रेमलता मोहेउ सु जेहि, रामहुँ देखि सभाइ ॥१०३॥
नाम शनेहिनि केर दुख, सूखि सकल झरिजात।
प्रेमलता ऋतुराज महँ, जिमि बिटपन के पात॥१०४॥
नाम रटत हटिजात रुचि, भोगनि ते अनयास।
प्रेमलता अमि पियत जिमि, नाशै चातक प्यास १०५
नाम रटन सबबिधि सकल, भजननिके शिरताज।
प्रेमलता प्रभु सुरनि में, जिमि सतगुरु महराज॥१०६॥
नाम रटत रटवावते, काल पाइ उर चेत।
प्रेमलता होइहैं अवसि, जिमि कच कारे सेत ॥१०७॥
नाम रटत रटवावते, मन जनि बिलम लगाव।
प्रेमलता सु सिरात बय, लोहा के जिमि ताव ॥१०८॥

नाम रटन में विलम अब, नाहक लावत भाय।
प्रेमलता निशि दिवस जिमि, आयू बीती जाय।१०९।
नाम रटहु तजि विलम नतु, पछितैहौ परिणाम।
प्रेमलता शठ सूम जिमि, खोइ गाँठ कर दाम॥११०॥
नामरटे विनु चातुरी, गुण विद्या बल दाम।
प्रेमलता विनु काम सव, जिमि नर वानर चाम।१११
नामशनेही लोक अरु, श्रुति ते बाहिर सन्त।
प्रेमलता सबविधि सदा, भयेउसु जिमि गजदन्त।११२।
नाम शनेही नामबल, श्रम बिनु लखहिं तिलोक।
प्रेमलता करतल सुजिमि, तेहि लगिरहत अशोक।११३।
नामरटे बिनु कबहुँ उर, होत न रहित बिकार।
प्रेमलता यहिभाँति जिमि, झार विनु घर द्वार॥११४॥
नामरटनाविनु वढत उर, अरुझेरो दुखदाय।
प्रेमलता जिमि माकरी, घर घेरे घर छाय॥११५॥
नामहीन जग जाल जन, अरुझे छूटत नाहिं।
प्रेमलता दुख सहत जिमि, बाज पींजरा माहिं॥११६॥

नामहीन नर कामबश, भये बाम आधीन ।
प्रेमलता कपि भालु जिमि, नाचहिं जहँ तहँ दीन॥११७॥
नाम रटे बिनु भजन बहु, भक्ति भावना ज्ञान ।
प्रेमलता सब ब्यर्थ जिमि, मूर्ख द्विजहिं दियेदान॥११८॥
नाम रटनमें करहिं जे, प्रेमलता नर ढील ।
ते पाछे दुख लहहिं जिमि, बूढ़ बिमरिहापील ।११६।
नाम रटे बिनु दुखित नर, नारि रहहिं तिहुँकाल ।
प्रेमलता धनहीन जिमि, अबुध कुटुम्बी हाल ॥१२०॥
नाम रटन बिनु निपट अति, फीको लगे फकीर ।
प्रेमलता जिमि समर में, शस्त्र ढाल बिनु वीर॥१२१॥
नाम रटे बिनु खात जे, प्रभु धन दास कहाय ।
ते जिमि निमकहराम नृप, सेवक प्रेमलताय ॥१२२॥
नामरटन सुख पालकी, तजि तेहि जीव गँवार ।
प्रेमलता करि कर्म जिमि, भाचह खर असवार ॥१२३॥
नाम नेम रति रहित जे, तिनकर नाम न लेइ ।
प्रेमलता जिमि सन्त शुचि, राजधान तजि देइ ॥१२४॥

नाम शनेही प्रिय प्रभुहिं, मिथिलाकी जिमिभूमि ।
प्रेमलता लागत सुजेहि, अवलोकत नित घूमि ॥१२५॥
नामरहित मुख वेषवर, वन्यो गृही वरु सन्त ।
प्रेमलता नट नारिजिमि, होय फजीहत अन्त ॥१२६॥
नामहुँ रटत न करत उर, सियबर को बिश्वास ।
प्रेमलता ते जीव जड़, जिमि मारग को घास ॥१२७॥
नाम रहित जिन्हिके वदन, बिगत शील बिकराल ।
प्रेमलताअहि सदनजिमि, बचनकहत जनुकाल।१२८।
नाम रटन में बिघ्न जे, करहिं आय बरियार ।
प्रेमलता तिन्हि तजिय जिमि, सन्त मोहमद मार।१२९।
नाम सुनत सुमिरत रटत, समुझत जे जन कोय ।
प्रेमलता ते प्रिय प्रभुहिं, धनुष बाण जिमि दोय ।१३०।
नाम रँगे प्रभु पद पगे, मोह निशा चैतन्य ।
गुरु सेवक जिमि जीवते, प्रेमलता जग धन्य॥१३१॥
नामहिं रटे न रामके, धामनि करी सु सैल ।
प्रेमलता बाँधे मरे, जिमि तेली को बैल ॥ १३२ ॥

नामहिं रट्यो न घर तज्यो, गुरु न मिल्यो दिल्दार।
प्रेमलता बन बन फिरत, ते जिमि सूकर स्यार। १३३।
नाम रटै तो घर तजै, सेवै सत गुरु साध।
प्रेमलता तेहि बिनु फिरत, बन रते जिमि ब्याध।१३४।
नामहिं रटत न मोह बश, शीस धरचो जग भार।
प्रेमलता दुख सहत जिमि, मर्कट मूठी मार ॥ १३५॥
नाम रटत छूटत कठिन, बन्धन जानत नीक।
प्रेमलता मानत न जिमि, कामी चलत अलीक।१३६
नाम सुगन्धी उड़ति नित, जेहि मुखते चहुँ ओर।
प्रेमलता ते श्रेष्ट जग, जिमि श्री सतगुरु मोर। १३७।
नाम रटन में रमि रहे, जानि मरन निज छिप्र।
प्रेमलता ते श्रृष्टि में, पूजनीय जिमि बिप्र ॥१३८॥
नाम रटन प्यारी लगी, टारी जगकी रीति।
प्रेमलता धरि टेक जिमि, मीन पीन की प्रीति ॥१३९॥
नाम रटत लखि परत जग, लखन राम सिय रूप।
प्रेमलता मारीच जिमि, उपजै ज्ञान अनूप ॥ १४०॥

नाम रटन अवलम्ब इक, गहि तजि कर्म अनेक ।
प्रेमलता दशकन्ध जिमि, मिल्यो ठानि दृढ़ टेक ।१४१।
नाम रटन की टेक इक, कोमल परम अनीह ।
प्रेमलता जगबिचबसत, जिमिदाँतानि बिचजीह १४२
नाम रटन कीन्हीं नहीं, ऊँचे चढ़ि करि सोर ।
प्रेमलता लदि लदि मरे, भाटनि के जिमि घोर।।१४३।।
नाम रटत तजि आलश, पाछिल निशि उठि न्हाइ ।
प्रेमलता ते पुरुष जग, सुर जिमि परत लखाइ । १४४।।
नाम रटन अतिशय कठिन, खाँड़े की जिमि धार।
प्रेमलता कोउ २ अड़हीं, धीर बीर हुशियार । १४५ ।।
नाम रटन अति कठिन जिमि, माघ पूस अस्नान ।
प्रेमलता बड़ि भोर कोउ, मज्जत सन्त सुजान ।१४६।
नाम रटन अति दुर्लभ, कादर जीवनि मीत ।
प्रेमलता जिमि अन्धनि, पावन प्रेम प्रतीति ।।१४७।।
नामरटन परपञ्चमें, बनत न चढ़त सुरङ्ग ।
प्रेमलता अति कठिन जिमि. भेड़ बाघ को सङ्ग।।१४८।।

नामरटन रगड़ा निरखि, कादर जात पराय ।
प्रेमलता कूदैं सुभट, जिमि सन्मुख रिपु पाय ॥ १४९॥
नामरटन अति अगमतर, निबहत नहिं सबकोय।
प्रेमलता कलि कर्म जिमि, करत बिघ्न बहुहोय॥ १५०॥
नामरटन अति कठिनई, कदरनि को नहिं काम ।
प्रेमलता डरि भागहीं, सन्त सु लाखि जिमि बाम॥ १५१॥
नामरटन बिनु मिटत नहिं, जीवनि कर सन्देह ।
प्रेमलता जिमि अशन बिनु, रहि न सकत तनु येह १५२
नामरटे बिनु भच्छहिं, काल न रच्छहिं कोय ।
प्रेमलता जिमि बाघ मुख, परयो न छूटै सोय ॥ १५३॥
नामरटे बिनु उदर कलि, पैठि खाइहैं फारि ।
प्रेमलता मंजारि जिमि, मूसहिं देइ बिदारि ॥ १५४॥
नामरसिक मिलि जाँयँ जो, सेवै करि सु शनेह ।
प्रेमलता मन क्रम बचन, अबिबेकी जिमि देह ॥१५५॥
नामरटे बिनु सकल कृत, कर्म धर्म अनयास ।
प्रेमलता होइजात जिमि, कलि अधर्म धन नाश।१५६।

नामरटत आवेश ते, बसि मिथिलादि सुदेश ।
प्रेमलता ते धन्य जग, नागनि में जिमि शेष ॥१५७॥
नामरटन जेहि प्रिय परम, शरम भरम तजि दीन ।
प्रेमलता तेइ कलि सुखी, जिमि सु साधु मदहीन ॥१५८॥
नामरटत करि नकल बहु, प्रेम विहीन सकाम ।
प्रेमलता सु मजूर जिमि, लहहिं काम नहिं राम ॥१५९॥
नामजापकनि देखि जे, नामरटत अनखाय ।
प्रेमलता ते खाँड जिमि, फाँकत रेणु मिलाय ॥१६०॥
नामरटै जो शिष्य गुरु, कहहिं करन गृह काज ।
प्रेमलता बलि भूप जिमि, तजै सुगुरु ससमाज ॥१६१॥
नामरटहिं तजि गेह जे, निरालम्ब निर्बन्ध ।
प्रेमलता उत्तम सु जिमि, कञ्चन सहित सुगन्ध ॥१६२॥
नामरटहिं मन क्रम बचन, करहिं साधु गुरु सेव ।
प्रेमलता ते पुजहिं जग, जिमि पाथर बनि देव ॥१६३॥
नाम भरोसे रहहिं नित, सब बिधि हृदय अक्षोभ ।
प्रेमलता ते प्रभुहिं प्रिय, जिमि सु साधु निर्लोभ ॥१६४॥

नामरटत हटके जु कोउ, मातु पिता गुरु भ्रात ।
प्रेमलता तिन्हि तजिय जिमि, जीव अवधि लहि गात
नामरटन रस पियत जे, ते जग जियत अभीत ।
प्रेमलता जिमि सुगुरु लहि, पापिउ होत पवीत ॥ १६६॥
नामरटन रसपियत जे, ते जन भयेउ सनाथ ।
प्रेमलता जिमि सकलबिधि, सुखद शरणसियनाथ १६७
रटतरटत श्री नाम मुख, उर सुख सरसत मीत ।
प्रेमलता रँग बदल जिमि, जस रगड़े तस पीत ॥ १६८॥
नाम रटे बिनु भास सत, यह जग झूठ अतीव ।
प्रेमलता कपि कीर जिमि, फसे सहहिं दुख जीव। १६९।
नाम जापकनि केरि शुधि, समय समय प्रभु लेत ।
प्रेमलता पशुपाल जिमि, पशुहिं बाँधि भुसदेत। १७०।
नाम रटन लयलीन जे, तिन्ह कहँ प्रभू सचेत ।
रखहिं आप किसान जिमि, प्रेमलता निज खेत। १७१।
नाम रटत दुख दोष सब, श्रम बिनु आप नशाहिं।
प्रेमलता रिपु बेग जिमि, गम खाये जरि जाहिं॥ १७२॥

नाम रटे बिनु अगम प्रभु, मिलन सु सन्त सुभाव ।
प्रेमलता संसार निधि, पैरि पार जिमि जाव ।। १७३ ।।

रटत रटत सियराम जन, जात ऊँच पद पाइ ।
प्रेमलता शिशु अटहिं जिमि, सीढ़िनि धरि चढ़ि जाइ १७४

नाम रटन अनुपम जरी, हरै सकल रुज पाप ।
प्रेमलता सतगुरु सु जिमि, नाशैं भव भ्रम ताप । १७५ ।

नाम जापनि के सकल, नाशत कठिन कुयोग ।
प्रेमलता जिमि प्लेग में, मरत चटापट लोग ।। १७६ ।।

नाम सङ्ग ह्वै जात भल, गुणद बिषहु अति भीम ।
प्रेमलता लहि चैत जिमि, सुखद होत कटु नीम । १७७

नाम रटै सटि शीस दै, तब नाशै लिपि भाल ।
प्रेमलता मिजि कलम करि, पलटै जाति रसाल । १७८ ।

नाम रटत पलटत सकल, गुण स्वभाव वपुरंग ।
प्रेमलता जिमि सूर लहि, शूर सु सन्मुख जंग ।। १७९ ।।

नाम रटन में लाव जनि, येरी जिभिया बार ।
प्रेमलता लखि कठिन कलि, जिमि कृपाण की धार । १८० ।

नाम रटे बिनु करहिं को, त्रिभुवन रचा तोर।
प्रेमलता दुख सहहिं जिमि, नृपकारागृह चोर।१८१।
नाम रटन बिनु फीक अति, लगत सु साज समाज॥
प्रेमलता सबभाँति जिमि, नृपति बिहीन सु राज।१८२।
नाम रटन सब कहँ सुखद, सन्तनि के तौ प्रान।
प्रेमलता जिमि बालकनि, पयतजि आश न आन।१८३।
नाम रटन सर्बश्व लखि, रटत सन्त दृढ़ नेम।
प्रेमलता जिमि पतिब्रता, सेवति पतिहिं सप्रेम।१८४।
नामहीन सम्पन्न सब, शुभ लच्छण गुण धाम।
प्रेमलता नहिं सोह जिमि, पति बिनु सुन्दरि बाम।१८५।
नाम रटन बिनु करत जो, जीव शुभाऽशुभ काज।
प्रेमलता कठपुतरि जिमि, नाचत सो तजि लाज।१८६।
नाम रटन परिहरेउ जिन्ह, ते शठ आपहिं आप।
प्रेमलता लरि मरत जिमि, कपि कूकर सहि ताप।१८७।
नाम रटे बिनु धोख प्रद, कलि सब करतब ठाट।
प्रेमलता सरितीर जिमि, बिनु कोठी को घाट॥ १८८॥

रामनाम कर स्वाद सुख, जानहिं सन्त सुजान ।
प्रेमलता जिमि अशन रस, रसनहिं करत बखान ।।१८९।।
नामहिं रटत न जीव शठ, हठ करि जरत हमेश ।
प्रेमलता सम्पाति जिमि, पतित होत सहि क्लेश ।।१९०।।
नामजापकनि केर रिपु, बलवन्तौ मरिजात ।
प्रेमलता लखि प्रगट जिमि, रावणादि बिख्यात ।।१९१।।
नामरहित जानिकरिय गुरु, परिय न भव भ्रम कैद ।
प्रेमलता परिहरिय बरु, बुध जिमि रोगी बैद ।।१९२।।
नाम शनेह सुहीन जे, करिय न तिन्ह कर सङ्ग ।
प्रेमलता परिहरिय जिमि, बुध कर्मनाशा गङ्ग ।।१९३।।
नामरटे बिनु त्रिबिधि ज्वर, अवसि देइ दुखदाहु ।
प्रेमलता लहि समय जिमि, ग्रसै चन्द्रही राहु ।।१९४।।
नामरटन सबते भली, कहहिं सु सन्त बिचारि ।
प्रेमलता जिमि अशन बिच भात सु रोटी दारि ।।१९५।।
नामरटन भावै सदा, अपर न कछू सुहाय ।
प्रेमलता जिमि ज्वारिही, सूझहिं आपनि दाय ।।१९६।।

नामअमल अँग चढ़ि रह्यो, नखसिख बिसर्यो होस।
प्रेमलता उन्मत्त जिमि, घूमत तजि गुण दोष॥१९७॥
नामअमल चढ़ि जात जब, तबन परै कछु सूझि।
प्रेमलता रण शूर जिमि, मारै मरै सु जूझि॥१९८॥
नामसुजापक निडर मृदु, बे परवाह निशोच।
प्रेमलता बालकनि जिमि, रहत न जानहिं पोच॥१९९॥
नाम जापकनि के बचन, साँचे सदा सुठीक।
प्रेमलता अनमिट सु जिमि, पाथर पै की लीक॥२००॥
नामजापकनि सेइये, मन बच क्रम करि नेह।
प्रेमलता नाशहिं तपनि, ग्रीषम को जिमि मेह॥२०१॥
नामजापकनि केर रुख, जुगवत रहिये हमेश।
प्रेमलता जिमि भूप बर, भलीभाँति निज देश॥२०२॥
नामसुजापक कहहिं जो, शिर धरि करिये सप्रीति।
प्रेमलता परिजन प्रजा, मानहिं जिमि नृप नीति२०३
नामउमङ्ग सु अङ्ग जब, चढ़ै होय दिल दङ्ग।
प्रेमलता घूमत फिरै, जिमि गज काम तरङ्ग॥२०४॥

नामरटत नामिहिं मिलत, जीव सु श्रमबिनुजाय ।
प्रेमलता जिमि गङ्ग सँग, मीन सु सिन्धु समाय।२०५।
नामसुमहिमा अमित अति, अमित जगत दृष्टान्त ।
प्रेमलता कछु लिखेउँ लहि, सुगुरु कृपा शिद्धान्त २०६
पढ़िगुनि समुझिय सन्त जन, रटिय रटाइयनाम ।
प्रेमलता पर करि कृपा, तजि प्रपञ्च दुख धाम ॥२०७॥
तन सराँयँ में बैठि जानि, दिन२ होय अचेत ।
प्रेमलता चलना अवसि, सिय पिय पुर साकेत॥२०८॥
मति भटियारी मिलि रही, कामादिक ठग सङ्ग ।
प्रेमलता वर बयस तब, लूटहिं नित रचि ढङ्ग ॥२०९॥
हरि सु बयस धन जाल पुनि, रचि तोहि चोर बनाय ।
प्रेमलता करि सोर सठ, यमग्रह देइँ पठाय ॥२१०॥
असबिचारि तजि गफलता, सफल जन्म करिलेउ ।
प्रेमलता सियराम रटि, गर्भ कौल चित देउ ॥२११॥
अब अब करत सु जन्म सब, गयेउ बीति बिनुकाम ।
प्रेमलता भरि पेट पुनि, पछितैहौ परिणाम ॥ २१२ ॥

बड़े भागते मिलत यह, नर शरीर सुखधाम।
प्रेमलता तेहि कर सु फल, रटना नाम ललाम ।२१३।
जो न रटहिं सियराम लहि, नर शरीर मति बाम।
प्रेमलता ते परहिं भव, पुनि पुनि परिहरि नाम ।२१४।
अबहूँ चटपट चेत करि, रटि सियराम सु नाम।
प्रेमलता तरु भव निधिहीं, चढ़ि चलि प्रीतम धाम।२१५
काढ़ि चलि जग गृह कूपते, बढ़ि चलि आगे धाय।
प्रेमलता गाढ़ि बात जानि, काल रह्यो मड़राय ॥ २१६॥
लियो लियो बचि भागि बचि, सन्त शरण में आउ।
प्रेमलता रटि नाम झट, यमते जीव बचाउ ॥ २१७ ॥
बड़े बड़े भट पटकि महि, गटके छण महँ मीच।
प्रेमलता रटि नाम बचि, तेहिसन सन्तनि बीच ।२१८।
बाम बाम मन देइ करि, सुत सुमातिहिं हरि लेत।
भोग रोग उपजावहीं, प्रेमलता करु चेत ॥ २१६ ॥
तीनों मिलि मृत्युहिं करैं, हरैं सु ज्ञान बिचार।
प्रेमलता तिहुँ तजेउ बिनु, मिलहिं न राम उदार॥२२०॥

बाम भोग सुत तीनि तजि, भजि सियराम सुनाम।
प्रेमलता सन्तनि निकट, बसि निर्भय ब्रशुयाम ॥२२१॥
सुधरेउ श्रीसियराम रटि, मोसे अधम अपार।
प्रेमलता की बिनय सुनि, रटिये नाम उदार ॥२२२॥
हाथ जोरि पाँयँनि परौं, पुनि पुनि करौं निहोर।
प्रेमलता पर करि कृपा, नाम रटिये निशि भोर॥२२३॥
हा ? हा ? करि बर मागहूँ, दीजिये सब नर नारि।
प्रेमलता पर छोह करि, नामहिं रटिये पुकारि॥ २२४॥
यह जग माया पेखनों, जनि तेहि देखि भुलाउ।
प्रेमलता सिख मानि मन, श्री सियराम सु गाउ॥२२५॥
कानी कौड़ी के रहे, मोसे सठ जग जीव।
प्रेमलता ते नाम रटि, भये सकल सम सीव ॥ २२६॥
यह महिमा श्री नामकी, केहिकी पटतर देइ।
प्रेमलता तउ अग्य नर, भरत कुदेवनि सेइ ॥ २२७॥
पुनिपुनि सहत कुसाँसति, जन्मि २ मरि मन्द।
प्रेमलता नहिं करत गुरु, नाम रसिक सुखकन्द ॥२२८॥

नामरसिक गुरु बिनु किये, रटे बिना सियराम।
प्रेमलता सपनेउँ नहिं, जीव लहहिं बिश्राम ॥२२९॥
श्रुति पुराण बुध सुजनमुनि, सब मतवादी सन्त।
प्रेमलता निशिदिन कहहिं, नाम अधार सु अन्त २३०
सबकृत परिहरिली जिये, नामसु दृढ़ अवलम्भ।
प्रेमलता रटि भेटिये, प्रीतम राम अदम्भ ॥२३१॥
ये दोहनि कर पाठ नित, करहिं जे बैठि इकन्त।
प्रेमलता रटि नाम मुख, पावहिं ते सियकन्त ॥२३२॥
अवधपुरी महँ कीन्ह यह, पूर्ण ग्रन्थ हर पीर।
प्रेमलता रटि नाम मुख, बैठि सु सरयूतीर ॥२३३॥
गुरु द्वारा सतगुरु सदन, गोलाघाट प्रसिद्धि।
प्रेमलता के स्वामि तहँ, राजत सँग ऋधि सिद्धि २३४
यद्यपि मैं मतिमन्द अति, कामी कुटिल कपूत।
तदपि दयानिधि राखहीं, मोपर कृपा अकूत ॥२३५॥
जबतें लीन सु शरण मोहि, तबही ते प्रतिपाल।
करन लगे रक्षा सु मम, असगुरु दीनदयाल ॥२३६॥

दीन्ह पढ़ायसु नाम मोहिं, सियपिय रहस समेत ।
सुखनिधान करकंज धरि, शिरसु करायो चेत ॥२३७॥
कबहुँ न पैहौं उऋण मैं, सतगुरु ते तिहुँ काल ।
असबिचारि पदकञ्जमें, कीन्ह भेट निज भाल ॥२३८॥
जयजय श्री गुरुदेवकी, जयति नाम सियराम ।
प्रेमलता जयजयति सब, सन्त सु जापक नाम ॥२३९॥
बार बार बर मागहूँ, सबसन परि परि पाँयँ ।
प्रेमलता भव दोष बिनु. नामरटे नाहिं जाँयँ ॥२४०॥
जन्मौं कौनिउँ योनि महँ, कर्म बिबश तजिदेह ।
प्रेमलता पै नाम सन, छूटै कबहुँ न नेह ॥२४१॥

इति श्री जय सियराम जय जय सियराम नामध्वनि प्रचारक
परमहंस श्री १०८ श्री सियालाल शरणजीमहाराज
उपनाम श्री प्रेमलता जू कृत श्री सियाराम नाम
महिमा दृष्टान्तावली समाप्त सुभम् ।

जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराय जय जय सियराम ॥

अथ।

श्रीसतगुरुशब्दयथार्थज्ञानवर्णन

श्रीसतगुरुवेनमः ॥ श्रीसीताराम नामाभ्यांनमः ॥ श्री हनुमते नमः ॥

दोहा।

गार मार फटकार अरु, तिरस्कार सबिचार।
करै भरै आनन्द उर, प्रेमलता सुखसार ॥ १ ॥
अबुधनि कर प्रेमउ दुखद,सुखद बुधनि को क्रोध।
प्रेमलता परिहरि तिन्है. सेइय सन्त सबोध ॥ २ ॥
सतगुरु मार कुम्हार जिमि, गढ़ि गढ़ि करत सुढार।
भीतर ते रच्छा करत, बाहिर ते फटकार ॥ ३ ॥
गुरु दरजी शिषि कापड़ा, काटि करै सतखण्ड।
पुनि तेहि सीं जामा करै. प्रेमलता दै दण्ड॥ ४ ॥
गुरु तावै सीतल करै. पीटि रटावै नाम।
जिमि सुनार गढ़ि सोनहीं. भूषण करै ललाम ॥५॥

गुरु रगड़ैं धरि चरण तर, शिष्यहिं करन सुयोग ।
शस्त्रनि मलि निर्मल करत, जिमि सिकलीगर लोग ।६।
सतगुरु देव किशान शिषि, खेत जोति बहुबार ।
उपजावतवर भजन अन, रच्छा करि सबिचार ॥७॥
गुरु माली शिषि बागही, जुगवत रहत सहेत ।
ऊपर ते काटत रहै. नीचे पानी देत ॥ ८ ॥
गुरु न्यायी नृप रैयत, शिषि सुदंड तेहि देइ ।
नीति सिखाइ सु प्रीति युत. जीति स्ववश करि लेइ ।६।
शिषि रोगी गुरु बैद्य वर. बचन सु औषध तीत ।
प्रेमलता अचवाय उर. करत निरोग अभीत ॥१०॥
गुरु धोबी शिषि मलिन पट, अमल करत अति धोय ।
कूटि मोगारिनि पटकि शिल, सबहिं सुखद तब होय।११।
गुरु भृङ्गी शिषि भारही, धरि तनु करै अचेत ।
प्रेमलता भरि शब्द श्रुति, निज समान करि लेत।१२।
गुरु पाकी सामा सुशिषि, देत सु अशन बनाय ।
प्रेमलता जल अनल सँग, कूटि कपटि डहँकाय।१३।

गुरु भूँजा शिषि अन्नहीं, देत भारमें डारि।
प्रेमलता काढ़त बहुरि, गर्ब गरुअता जारि॥ १४॥
गुरु बढ़ई शिषि लाकरी, काटि छाँटि गढ़ि छोलि।
प्रेमलता प्रगटावहीं, पुतरी अति अनमोलि॥१५॥
गुरु सर्बेश्वर सर्ब हित, जो उपदेशहिं नाम।
प्रेमलता तिन्हि सेइये, दुख सुख सहि बशुयाम।१६।
तन उपदेशक मिलत बहु, गुरु असे मद मान।
कहि कहि रोचक बचन बर, बरबस फूँकत कान॥१७॥
तिन्हि के बश परि सहत दुख, बँधे बिचारे जीव।
गेह तजेउ पर सुखन भा, मिलेउ न श्री सिय पीव।१८।
स्वारथ रत गुरु शिष्य दोउ, पोषत देह मलीन।
प्रेमलता ठगि ठगि जगत, ते घर तजि का कीन।१९।
बहु धन्धे धारे शिरनि, बिधि निषेध व्योहार।
रटेउ न श्री सियराम मुख, प्रेमलता सुख सार॥ २०॥
हठकरि करत निरूपण, मनमुख मत हित लागि।
प्रेमलता श्रुति सम्मत, सुनत न मति भ्रम पागि॥२१॥

साधत साधन कष्ट करि, पूजत बहु बिधि देव।
प्रेमलता तजि नाम सिय, राम शंभु जेहि सेव ॥ २२ ॥
अबुध गुरुनि नाशे सकल, जीव फँसाय प्रपञ्च।
प्रेमलता निज स्वार्थ लगि, नाचत बहुविधि नञ्च॥२३॥
परमारथ स्वारथ रते, पर परमारथ त्यागि।
प्रेमलता गुरु शिष्य कलि, इन्द्रिनिके सुख लागि॥२४॥
लिखत पढ़त बहु ग्रंथ पै, होत न हृदय प्रबोध।
प्रेमलता सूझत नहीं, हित अनहित रत क्रोध॥ २५ ॥
शिष्य कहत सोइ करत गुरु, स्वारथ साधक क्रूर।
प्रेमलता केहि विधि तरैं, ते दोउ तन सुख चूर॥ २६ ॥
शिष्य न खोजै बिमल गुरु, गुरु न शिष्यहि चीन।
प्रेमलता गुरु शिष्य तस, जोरी मिली मलीन॥२७॥
गली गली घूमत नहीं, सतगुरु बिकत न हाट।
प्रेमलता जु लखावहीं, पिया मिलन की बाट॥ २८॥
बन बन बिच चंदन नहीं, सर सर कंज न फूल।
प्रेमलता तिमि कहुँ कहूँ, सतगुरु हरण कुशूल॥२९॥

अति दुर्लभ जग जीवनि, जिमि रस सुधा मराल।
प्रेमलता तिमि सतगुरु, मिलत न परम कृपाल॥ ३०॥
काक कंक बगुला सरिस, गुरुआ जगत अपार।
डोलत बोलत बचन कटु, स्वारथ रत मद मार॥ ३१॥
सिंघल बासी जीवनि, अति दुर्लभ जिमि नाग।
प्रेमलता तिमि कलि मालीनि, सतगुरु मिलन सुभाग।
घुरघुरात गुरुआ फिरैं, खोजत शिष्य मलीन।
प्रेमलता खल कोल जिमि, स्वान चुधा आधीन॥ ३३॥
गुरुआ गर्दभ पोथियाँ, लादें फिरत अनन्त।
सार संग्रही सतगुरु, प्रेमलता कोउ सन्त॥ ३४॥
रचि रचि बैठे जाल बहु, गुरुआ बधिक समान।
प्रेमलता सुबझावहीं, जीवनि दै दै ज्ञान॥ ३५॥
जो कोउ लागै नाम में, धाम काम तजि भर्म।
गुरुआ ताहि गिरावहीं, कहि कहि नाना धर्म॥ ३६॥
अशन बसन धन लालच, लासा कठिन लगाइ।
प्रेमलता अरुझावहीं, गुरुआ अति दुख दाइ॥ ३७॥

जीव अज्ञ समुझत नहीं, हित अनहित केहि माहिं।
प्रेमलता तेहि कारण, प्रभुते दूरि पराहिं ॥ ३८ ॥
गुरुआनि बश परि सहत दुख, जीव रटे बिनु नाम।
प्रेमलता बहु कर्म करि, लहत न कालि विश्राम ॥ ३९ ॥
रोचक अपर भयानक, कर्म बखानि बखानि।
कर्म ज्ञान बिच जीवनि, पटकत गुरुआ आनि ॥ ४० ॥
कर्म सु कछु परमारथी, ज्ञानहिं स्वारथि जानि।
प्रेमलता मैं ब्रह्म जो, निज मुख कहत बखानि ॥ ४१ ॥
ऐसे ज्ञानी रोचकी, कर्म भयानक मन्द।
ये दोऊ पावत नहीं, राम सच्चिदानन्द ॥ ४२ ॥
तीजे जौन उपासक, बचन यथारथ धारि।
प्रेमलता रटि नाम मुख, पावैं जन त्रिशिरारि ॥ ४३ ॥
नाम रटै सियराम धरि, ध्यान हिये सियराम।
यही परम परमारथ, प्रेमलता सुख धाम ॥ ४४
पर परमारथ ग्यान जेहि, जान कहावत सोइ।
प्रेमलता बिरले जगत, कोटिनि में कहुँ कोइ ॥ ४५ ॥

ग्रंथ रचित त्रय काण्ड मय, अरु त्रय बचन बिचारि।
प्रेमलता बुध मुनि समुझि, लेत तत्व उर धारि ॥४६॥
कर्मरु ज्ञान उपासना, ये त्रय काण्ड सुजान।
रोचक अपर भयानक, बचन यथारथ मान ॥ ४७ ॥
कर्म ज्ञान दुइ काण्ड अरु, रोचक बचन भयान।
चतुर त्याग चहुँ गहत दुइ, भगति यथारथ ज्ञान ।४८।
रामनाम पर ब्रह्म जो, पर परमारथ रूप।
रटै तिन्हैं लय लाय सोइ, भगति सु परम अनूप ।४९।
यही यथारथ बोध बर, उपासना शुचि सार।
अपर शुभाशुभ साधन, कर्म ज्ञान सबिकार ॥५०॥
कहत सुनत सदग्रंथ बहु, श्रोता बक्ता मूढ़।
होत न बोध यथारथ, प्रेमलता गति गूढ़ ॥ ५१ ॥
बक्ता बकता मरिगया, जगा न सोता जीव।
प्रेमलता बर बोध बिनु, दोउ न पाये पीव ॥ ५२ ॥
बक्ता बैठि सु आसननि, बकता कथा पुराण।
धनहित चहत न जीवको, प्रेमलता कल्याण ॥५३॥

करि करि ऊँचे हाथ बहु, बकता ज्ञान विराग ।
बकत बसन धन अशन हित,बकबक मोह न भाग ५४
लोभी लम्पट लालची, बक्ता बगुला काग ।
स्वारथ रत प्रगटावहीं, बातानिके बहु बाग ॥ ५५ ॥
कर्मरु ज्ञान उपासना, मिश्रित करहिं बखान ।
प्रेमलता बूझैं नहीं, श्रोता गन अज्ञान ॥ ५६ ॥
रोचक अपर भयानक, बचन यथारथ सानि ।
प्रेमलता बक्ता बकैं, श्रोतानि लाभ न हानि ।५७॥
लोभी वक्ता मलिन मति, किमि समुझैं यह भेद ।
कोटिकल्प तिन्हि मुखकथा, सुनिये मिटे न खेद ।५८।
काल्पित नाना अर्थ करि, ब्यर्थ बजावत गाल ।
प्रेमलता बूझैं नहीं, शब्द अर्थ बाचाल ॥ ५६ ॥
मासिक नवह इक्काह बहु, करत पाठ सप्ताह ।
कंठकीन्ह पढ़ि २ विपुल, पोथी मिट्यो न दाह ॥६०॥
भागवती बानि ठगत कोउ, रामायणी कहाय ।
अहं फाँसि दोऊ बँधे, केहिविधि तत्व लखाय ॥ ६१॥

आप बँधेते आनहीं, छोरि सकैं किमि दीन।
प्रेमलता बकवाद बहु, बकत सु करनी हीन ॥ ६२ ॥
शुकमुख सुनि सोइ भागवत, तर्यो परिचित भूप।
सातै दिन महँ त्यागि तनु, पायेउ सुगति अनूप ।६३।
सोइ रामायण सात दिन, द्राबिड़ नृपकी बाल।
तुलसिदास मुख श्रवण करि, कुमर भयेउ ततकाल ६४
सतगुरु बिमल बिराग बिनु, ग्रंथनि को शुचि सार।
प्रेमलता बूझत नहीं, ग्रसित मोह मद मार ॥ ६५ ॥
बहु बिधि सोधत ग्रंथनि बोधत तत्व न रंच।
ब्रह्म ज्ञान छाँटत मुखनि, नख शिख फँसे प्रपंच ॥ ६६ ॥
बिधि निषेध के पार जो, परम सार को सार।
प्रेमलता सूझत नहीं, गुरु बिनु नाम उदार ॥ ६७ ॥
तेहि बिनु अन्ध उपासना, कर्म ज्ञान जप योग।
प्रेमलता कोउ सुखद नहीं, रोगिहिं जिमिबहुरोग ।६८।
तीरथ बर्त सुसाधन, पूजा पाठ सु धर्म।
श्री सियराम सु नाम बिनु, प्रेमलता सब भर्म ॥ ६९ ॥

नाम परत्व निरूपण, करै सु सतगुरु सोइ।
रटै रटावै अहर्निशि, बिधि निषेध भय खोइ॥ ७० ॥
नामहिं जानि यथारथ, तत्व गह्यो सोइ सन्त।
रटन अखन्ड उपासना, करि सु लह्यो सियकन्त॥ ७१॥
तजे कर्म ज्ञानादि बहु, साधन सुबिधि निषेद।
गहेउ नाम सियराम इक, प्रेमलता सु अभेद॥ ७२ ॥
रामरूप सोइ सतगुरू, बक्ताबर निर्लोभ।
प्रेमलता तेहि बचन सुनि, छूटत छण में छोभ॥ ७३ ॥
करत सार उपदेश सोइ, सोधि सास्त्र सिद्धान्त।
प्रेमलता तारत जनानि, नाशि मोह तम भ्रान्त। ७४॥
बोलें बचन यथारथ, अकि बैठ गहि मौंन।
प्रेमलता अस सतगुरू, महँगे जग जिमि सोंन॥ ७५ ॥
कस्तूरी मृग मृगनि बिच, नागन बिच मणियार।
कोउ कोउ जिमि तिमि सतगुरू, प्रेमलता संसार॥७६॥
कर्पूरी कदली कहूँ, मुक्ता गज जिमि कोइ।
प्रेमलता तिमि सतगुरू, सार संग्रही जोइ ॥७७॥

बृच्छानि में सुरतरु यथा, कामद गायन माँहिं ।
प्रेमलता तिमि सतगुरू, सार ग्रही बहु नाँहिं ॥ ७८ ॥
ग्रंथनि में चहुँ वेदजिमि, धामनि में साकेत ।
गङ्गनि में भागीरथी, तिमि कोउ सुगुरु सचेत॥७६॥
नखतनि बिचजिमि पूर्ण शसि,ग्रहनिबीचजिमिभानु ।
सन्तानि बिच तिमि एक कोउ,सतगुरु साँचोजानु।८०।
नारिनि बिच पतिबर्त कोउ. नरन सु बिच जिमि भूप ।
प्रेमलता तिमि गुरुनि बिच. कोउ सतगुरुसु अनूप ८१
यक गुरुआ अरु यक गुरू, तीसर सतगुरुजानि ।
बिलग २ तिन्हके कहूँ. चरित यथार्थ बखानि ।.८२॥
प्रथम सुनो गुरुआन के ज्ञान प्रपंच निधान ।
जिन्हिके बस जो जन परें, तिन्हकर कहुँन ठिकान ८३

अथ गुरुआ ज्ञान वर्णन

माननीयँ चर अचर सब. पूजनीयँ सब देव ।
मानुष तनु धरि कीजिये, मातु पितादिक सेव ॥८४॥

सुत दारादि समेत सुख, भोगो निबसि सुगेह ।
प्रेमलता यहि कारण, पाई मानुष देह ॥ ८५ ॥
गृहताजि भटकत फिरत जे, तजि कुल जाति स्वकर्म ।
प्रेमलता ते पतित नर, सब बिधि भूले भर्म ॥८६॥
उद्यम करि सेवहु कुटुम, सीख हमारी मानि ।
नतु परिहौ दुखसिन्धु में, मनमुख निज हठ ठानि ८७
बैरागिन की सीख जनि, मानहु करहु न सङ्ग ।
उदर हेतु तजि लाज बहु, फिरत बनाये ढङ्ग ।८८॥
कंठी तिलक रमाय अँग, चिचियावत सियराम ।
घर २ डोलत उदर लगि, माँगि बटोरत दाम ॥८९॥
पञ्चदेव श्रुति कहत जो, आश्रम बर्ण प्रधान ।
प्रेमलता तेहि त्यागि जे, चाहत निज कल्यान॥९०॥
कर्म धर्म तजि जाति कुल, डोलत जे महि मूढ़ ।
पावत नहिं सियराम ते, प्रेमलता गति गूढ़ ॥ ९१ ॥
राम रम्यो सब जगत में, बर्णत बेद पुरान ।
पूजत पाथर पीतरनि, बैरागी अज्ञान ॥ ९२ ॥

निराकार इच्छारहित, अगुण अखंड अभेद ।
घट २ ब्यापेउ ब्रह्मसो, गावत जेहि बुध बेद ॥६३॥
ताहि पुकारत बाहिर, बैरागी बिनु बोध ।
खोजत चहुँ धामनि फिरैं, करत न अन्तर सोध ।६४।
सदा एक अद्वैत अज, सताचित आनँद रूप ।
जन्म कर्म नामादि रुज, रहित प्रपञ्च अनूप ॥६५॥
रावणारि दशरथ सुवन, जाहि कहत अज्ञान ।
प्रेमलता तिन्हिकर कथन, भूलिहुकरयिन कान ।६६।
करहु कर्म जप तप धरम, तर्पण होम शराध ।
गेहनिवसि जनि सहहुदुख, बन २ फिरि जिमि ब्याध ६८
लखहु शृष्टि सब ब्रह्ममय , ज्ञान दृष्टि धरि ध्यान ।
प्रेमलता बासि गेह सुख, यहि सम भजन न आन ।६८।
कर्म प्रधान सु जगत में, कहत सुकर्मी लोग ।
तेहि बिनु वृथा उपाय सब, बिरति बेष जप योग ॥९६॥
कर्महींन रति मुकति गति, भगति भाव भगवान ।
प्रेमलता पावत नहीं, सपनेउ आतम ज्ञान ॥१००॥

तिलक छाप माला जटा, बेष भजन वैराग।
कर्म किये बिनु व्यर्थ सब, नेम छेम मत भाग ॥१०१॥
कर्महिं तारे बोरहीं, जीवनि भवनिधि बीच।
कर्महिं ब्रह्म सुतंत्र श्रुति, बदत तजें ते नीच ॥१०२॥
कर्म ज्ञान बिनु जीव जग, लहत न परमानन्द।
प्रेमलता शिद्धान्त यह गुरुआनि करमद फन्द॥१०३॥
गुरुआ बर्णी आश्रमी, कर्मी ज्ञानी रूख।
भरमायेउ बहु जीव जग, हरि श्री नाम पियूष ॥१०४॥
आपगये अरु आनहीं, पटक्यो चलत सुपन्थ।
कर्म ज्ञान उपदेश करि, प्रेमलता पढ़ि ग्रन्थ ॥ १०५॥
रोचक अपर भयानक, गहेउ यथारथ त्यागि।
तेहि लगि कर्म रु ज्ञान बिच, प्रेमलता रहे पागि॥१०६॥
कर्म ज्ञान रोचक बचन, पढ़ि सु भयानक लीन ॥
ग्रंथनि ते सु उपासना, त्यागि यथारथ दीन ॥१०७॥
गह्यो असार सु सार तजि, पढ़ि दोउ गुरुआ बेद।
कर्म ज्ञान असमर्थ अति, हरत न कालि भव खेद।१०८

सतयुग ज्ञान प्रधानता, रहेउ सु त्रेता कर्म ।
कथन मात्र कलि काल दोउ, कर्तब हीन सु धर्म ।१०९।
कथनी करतब हीन सब, गुरुआनि की जिय जानि ।
परिये न तिन्हि के फन्दप्रिय, प्रेमलता सिखमानि।११०।
बकत नपुंसक भाँड़इव, गुरुआ महा मलीन ।
सने बिषय सुख नख शिख, परमारथ पथ दीन ॥१११॥
जानत नहिं अज्ञान दोउ, बर्तमान युग धर्म ।
कर्मी ज्ञानी स्वारथी, नालायक बेशर्म ॥ ११२ ॥
तिन्हिकर कथन न कीजिये, कान जानि दुख मूल ।
प्रेमलता रटिये सदा, नाम हरण भव शूल॥ ११३ ॥

अथ श्री गुरु ज्ञान वर्णन

गुरुर्नि ज्ञान अब ध्यान दै, सुनिये सहित बिचार ।
नवधा भक्ति निरूपण, जेहि महँ बिबिधि प्रकार।११४।
दास्य सख्य वात्सल्य रस, शान्ति श्रृंगार अमाय ।
भजत सु बैष्णव प्रभुहिं इन्ह, साहित सुनातौ लाय११५

कोउ नारायण कृष्ण कोउ, दशरथ सुत श्री राम।
पूजत सबिधि सभाव सब, भक्त लहहिं मन काम॥११६॥
भक्तनि बश प्रभु रहत नित, यदपि अजन्म अदोष।
करत चरित धरि बिबिध तनु जनानि करन सन्तोष११७
राखत श्रुति मर्याद निज, धर्म जननि की टेक।
स्वयं आप परब्रह्म जो, धरि जग रूप अनेक॥११८॥
जन्म कर्म प्रभुके बिमल, गाय गाय जन लोग।
प्रेमलता भवसागर, तरत बिना जप योग॥११६॥
नाम रूप लीला ललित, धाम सु परिकर चारि।
प्रेमलता जग प्रगट यश, गावत वेद पुरारि॥१२०॥
नामहिं रटि गाय सु चरित, पूजि रूप बसि धाम।
प्रेमलता जन तरहिंभव, धारि सु वेष ललाम॥१२१॥
तिलक छाप कंठी युगल, माल मंत्र निज नाम।
संसकार ये कहत श्रुति, इन्हिबिनु द्रवहिं न राम॥१२२॥
सीतापति जो सर्बहित, गुणनिधान सर्वज्ञ।
परब्रह्म सर्वेश्वर, अगुण कहत जेहि अज्ञ॥१२३॥

सदा एकरस रहत तनु, षोड़त वर्ष किशोर।
राम सच्चिदानन्द सोइ, प्रेमलता चित चोर ॥१२४॥
कमल नयन अनुपम बदन, द्विभुज धरे धनुबाण।
श्याम अङ्ग नखशिख अमल, गावत बेद पुराण॥१२५॥
पूरण ब्रह्म अनादि अज, नराकार सुख धाम।
भक्तन हित नाना चरित, करत सदा सोइ राम॥१२६॥
अन्तरयामी आदि जे, बिपुल ब्रह्म अवतार।
सियबर के अंशज सकल, पूज्य परम संसार॥१२७॥
आज्ञा लहि महि प्रगटि ते, करत चरित सुख दैन।
प्रेमलता हति खलगणनि, राखहिंनिज श्रुति ऐन१२८
कारज करता रूपये, सगुण ब्रह्मके अंश।
रामनाम जेहि प्रगट जग, करत मोह विध्वंस॥१२९॥
चरण चिन्ह रघुनाथ के, अड़तालीश उदार।
धरिधरिते बहुरूप जग, प्रगटि हरत भूभार॥१३०॥
बहुतक जानि सुब्रह्म पर, सेइ तिन्हे मन काम।
प्रेमलता पावत सुजन, लहहिं न ते सियराम॥१३१॥

अमित जन्म को पुन्य जब, प्रगट होय जेहि आय ।
प्रेमलता तब लहहिं ते, सियपिय पद सुख दाय १३२
जिन्हि की भक्ति सुहावनी, करि उतरहिं भवपार ।
प्रेमलता बैष्णव सुजन, धनि धनि ते संसार १३३
सोइ पावन सोइ सुभग जग, सोइ सब गुण गण धाम ।
प्रेमलता सियराम पद, पूजत जे तजि काम १३४
सोइ पंडित सोइ पारखी, सोई सन्त सुजान ।
पूजत जो सियराम पद, प्रेमलता धरि ध्यान १३५
सोइ ज्ञानी दाता धनी, पूज्य प्रमाणो लोक ।
सेवत जो सियराम पद, प्रेमलता सु अशोक १३६
मन्दिर पुष्प सु बाटिका, बाग बिहार सुथान ॥
बिरचहिं प्रभुहित धन्यते, प्रेमलता मतिमान १३७
बहुबिधि भूषण बिमल पट, पहिरावत प्रभु अङ्ग
प्रेमलता करि बिनय बहु, सेवत नाना रंग १३८
नाना बिधि के अशन करि, रसमयसाजि सु थार ।

इष्टहिं हरषि पवावहीं, प्रेमलता बशुबार ।१३९।
सीतल जल अँचवाय मुख, देत सु पान बनाय ।
प्रेमलता ते प्रभुहिं प्रिय, प्राणहु ते अधिकाय १४०
पुष्पमाल अतरादि दै, आरति करहिं बजाय ।
बिधिवत सीतल तप्त बा, चौदह मोद बढ़ाय १४१
नाचि गाय निज इष्ट गुण, नाम प्रदक्षिण देइ ।
पुनि अस्तुति करि दण्डवत, उठि सुबलैयां लेइ ।१४२।
कोमल सेज सोआइ सुख, सेवन करै प्रसाद ।
बाँटि यथा बिधि परिकरन, बोलि भन्यो अहलाद १४३
पुनि नहाय पट पहिरि सुचि, रुख लखि देइ जगाय ।
करै आरती पुलकि अँग, सिंहासन पधराय ।१४४।
गान बाद्य प्रभु सन्मुख, नृत्य कला कल केलि ।
प्रेमलता करि सुख लहै, बढ़ै भक्ति बर बेलि ।१४५।
कहै सुने प्रभु चरित कछु. साँझ समय शुभ जानि ।
करै आरती भोग धरि, हरषि निरषि सुख खानि १४६

तेहि बिधि कौतुक पुनि करै बैठि सजातिनि साथ ।
रीझिरिझावै इष्टनिज, यहि बिधिसिय रघुनाथ ।१४७।
अलसाने लखि आखिरी, करै आरती गाय ।
पौढ़ावै सुख सेज शुचि, बिन्जन दूध पवाय ॥१४८॥
सेवा समय बिचारि करि, करै आप पुनि सयन ।
प्रेमलता निज इष्ट की, निरखि माधुरी नयन ॥१४९॥
प्रथम काल पुनि जागि निज, तन कृत करै बहोरि ।
संसकार करि इष्ट ढिग, जाय कहै कर जोरि १५०
नाथ उठिय अब भयेउबर, समय कृपा सुखकन्द ।
दीजियसुखनिजजननकहँ, प्रभुदिखायमुखचन्द ।१५१।
यहि बिधि बिनय सुनाय बहु, निकट जाइ पटटारि ।
निरखै इष्ट अनूप छबि, नयन निमेष बिसारि ।१५२।
बिनती करि बैठारि सुख, तिहुँ दिशि तोसक लाय ।
करै सुमंगल आरती, मुख मज्जन करवाय ॥१५३॥
उबटन अङ्ग सुगंधित, करै सु भाव समेत ।

अस्नानादि कराय पुनि, सेवा करै सचेत ॥१५४॥
अष्टकुञ्ज बिच बिधि यथा, आरति भोग बिहार।
करै करावै प्रथम जिमि, कह्यो समेत बिचार।१५५।
कहौं सुनहु बत्तीस जो, सेवा में अपराध।
पूजकते प्रभु के निकट, होत सु महा असाध १५६
प्रभुढिग हँसैठठाय अरु, भोजन करै कि सयन।
रुदनकरै पादय बहुरि, बोले मिथ्या बयन।१५७।
संसकार के हीन तनु, कुसमय सेवा ठान।
पाणि पाद धोये बिना, मन्दिर करैं पयान ॥१५८॥
मंत्रनि बिनु पूजा करै, विधि विहीन अस्नान।
प्रभु सन्मुख चाखे विना, अशन धरै अज्ञान। ५९।
निरस बस्तु अर्पें प्रभुहिं, अकि बिनु छानो नीर।
बैठे पाँव पसारि कै, प्रोढ़ासन प्रभु तीर ॥१६०॥
न्नायइष्ट ढिग अमल करि, पहिरि अशुचि पट अङ्ग।
मन मानी सेवा करै, करि श्रुति आज्ञा भंग १६१

भोगमंत्र मुद्रा सुबिनु, प्रभुनि लगावै भोग ।
खाँसै अकि छींकैं निकट, पसैं प्रभुहिं सरोग १६२
वैठे अकि ठाढ़ो रहै, असावधान दैं पीठि ।
निरखैअकि प्रभु सुछबितजि, औरनतन दैंदीठि ॥१६३॥
अभय रहै प्रभुते सदा, सेवा करै सकाम ।
सुनैं न चरित स्वइष्ट के, रटै न नाम ललाम ॥१६४॥
षटसम्पति सरणागति, प्रभु सुभाव रस भाव ।
जाने बिनु सेवा करै, सोनर नरकें जाव ॥१६५॥
धरत न हृदय अनन्य गति, मति भटकत चहुँ ओर।
प्रेमलता तेहि लागि प्रभु, द्रवत न बन्दी छोर ॥१६६॥
प्रभु प्रशाद पावत नहीं, बाँटि सजातिनि संग ।
छिपि छिपि भोगत भाग पर, पोषत आपन अङ्ग १६७
ये वत्तिस अघ दुखद अति, इन्हि समान बहु पाप।
होर रहत अनयास नित, जीवनि ते प्रद ताप ॥१६८॥
अघ बराय निज इष्ट पद, सेइय परम सचेत ।

सन्त सजातिनि सङ्ग नित, बहु बिधि निबसि निकेत॥
समय समय तजि कृपणता, रचै सहर्ष उछाह।
झूलनादि होरीं रुचिर, सियबर जन्म बिबाह १७०
दान करै भूषण बसन, न्योति जिमावै सन्त।
प्रेमसहित ब्यन्जन बिपुल, रीझैं तब सियकन्त १७१
प्रभुहित करै सुकर्म बहु, साधन ब्रत जप होंम।
सपनेउ काहुइ जीव कर, कल्पावै नहिं रोंम ॥१७२॥
प्रभुमय देखै शृष्टि सब, जड़ चेतन सबिबेक।
पूजै सबहिं सप्रेम नित, उर धरि भगति सुटेक॥१७३॥
जेहि बिधि रीझैं इष्ट निज, करै सुयतन बिचारि।
प्रेमलता बिपरीति तजि, सहन शीलता धारि १७४
टरै न भगति सुपन्थ ते, आवैं बिघन अपार।
प्रेमलता भरि जन्म तब, रीझैं सिय भरतार॥१७५॥
जीवनि गुरु उपदेशहीं, भगति करहु यहि रीति।
सेवहु निज निज इष्ट पद, निशिदिन मनगतिजीति१७६

पावत महल न टहल बिनु, जीव कहत बुध बेद।
भगति करत रीझत प्रभु, नाशत भवभ्रमखेद १७७
गुरु गोबिन्दसु सन्त पद, सेवै भाव बढ़ाय।
तन मन धनते बचनते, यही भजन सुखदाय १७८
नाम रूप गुण धाम चहुँ, प्रभुके अरु गुरु सन्त।
प्रेमलता मन क्रम बचन, सेइ लहिय भव अन्त १७६
स्वारथ तजि हरि गुरु भगति, परमारथ जे लोग।
करत लहहिंते अछत तनु, प्रेमलता सुख भोग १८०
भगति सुधर्म सनातन, तेहि बिनु जन कल्याण।
लहत न सपनेउ कहतसब, पंडित बेद पुराण १८१
परमारथ स्वारथ सने, भगत गुरुनि के ज्ञान।
कहेउँ कछुक बूझहिं सुजन, प्रेमलता मतिमान १८२
करनी लघु कथनी अधिक, भगत गुरुनि की जानि।
सुनिगुनि समुझहिं सन्त शुचि, मैंकछुकही बखानि १८३

अथ श्री सतगुरु ज्ञान वर्णन

बरणौं अब सतगुरुनि कर, ज्ञान यथारथ बोध।
सुनि समुझहिं सज्जन सुमत, प्रेमलता अबिरोध १८४

भगति ज्ञान अरु कर्मतिहुँ, कथन मात्र कलि काल।
करतब हीन उपाय सब, हरत न बिपति बिशाल १८५

सतयुग त्रेता द्वापर, भगति कर्म अरु ज्ञान।
देत रहे गति कुगति करि, जीवनि बदत पुरान॥१८६॥

सोई गति महराज कलि, सब सुख साज समेत।
रटत नाम सियराम मुख, बिनु श्रम सब कहँ देत १८७

स्वारथ परमारथ परे, पर परमारथ नाम।
प्रेमलता बिनु श्रम रटत, सब बिधि पूरत काम १८८

नामरटन सम भगति गति कर्म न ज्ञान बिचार।
जप तप साधन ध्यान ब्रत, योग यज्ञ आधार १८९

यजन भजन पूजा पठन, श्रवण मनन निदिध्यास ।
नाम समान न तुलत कछु, बिपुल बिमल अभ्यास १६०
दान धर्म व्रत तीर्थ बर, राग रङ्ग गुण गान ।
प्रेमलता सतकोटि मिलि, तुलहिं न नाम समान १६१
मंत्र यंत्र तंत्रादिक, भर्म धारणा धाम ।
प्रेमलता कोउ सुखद नहिं, सपनेउ कलि बिनु नाम १६२
ऋधि शिधि सम्पति सुगति रति, सेवा टहल सुसङ्ग ।
नाम रटन सम सुखद नहिं, बोधक शोधक अङ्ग १६३
असन बसन भूषण बिभव, सुत पितु मातु सु वाम ।
सेवक सुहृद सुभ्रात हित, सुखद न जस श्री नाम १६४
सत्यनाम सियराम इक, अपर प्रपञ्च तमाम ।
बिधि निषेध मय शोक प्रद, झूठ असार अराम १६५
स्वप्न लाभसम सुख सकल, जागे पै दुख होइ ।
प्रेमलता तिमि कर्म करि, गति न लहत कलि कोइ १६६
चारि लाख बत्तिस सहस, बर्ष नाम आधार ।

केवल नहिं कछु आन गति, कर्म ज्ञान आचार १६७
यदपि नाम चहुँ युगनि सम, सुखद सुबन्दी छोर।
कलि बिशेष नहिं आनगति, जीवनि कहँ चहुँओर १६८
सतयुग सौदा ज्ञान कर, बिकत रह्यो सब ठाम।
मिलत रह्यो सब जीवनि, प्रेमलता रटि नाम १६६
त्रेता चहुँ दिशि कर्म के, खुलेउ बजार अपार।
जियत रहे जन नाम रटि, करिकरि सोइ रुजिगार २००
द्वापर पूजाकी की खुलीं, बिपुल दुकाने लोक।
करत रहे व्योहार सोइ, जन रटि नाम अशोक २०१
अब न ज्ञान पूजन करम, केवल नाम अधार।
राखेउ कलियुग सर्ब हित, रटि उतरहु भव पार २०२
तिहुँ युगके कानून कलि, किये कठिन लखि दूरि।
कर्म ज्ञान अर्चादिजे, धर्म साधना भूरि ॥ २०३ ॥
कर्मी ज्ञानी पूजकनि, दुखित देखि कलिराय।
कहेउ लेउ अनयास गति, रटि सियराम सुहाय २०४

मोर राज जनि करहु कोउ, कष्ट कठिन गति हेत।
जेन केन बिधि नाम रटि, चले जाउ साकेत २०५
हठ करि जो करिहौ कठिन, साधन नाम बिहाइ।
पैहौ तौ ममराज दुख, सबहिं कहौं समुझाइ २०६
मंत्री पाप प्रधान मम, प्राणहु ते प्रिय मोर।
जो वह कहत सु करत मैं, राज काज चहुँ ओर २०७
कामादिक अघरूप मम, दूत प्रचण्ड अपार।
व्यापेउ ते दशहू दिशनि, करत अधर्म प्रचार॥२०८॥
कर्म ज्ञान अर्चादि शुभ, साधन किये सपाप।
करि करि मरहिं न हरहिं ते, जीवनि के परिताप २०९
केवल नाम अधार इक, परम प्रचण्ड अखण्ड।
रटिहहिं ते लहिहैं सुगति, अपर सहहिं मम दण्ड २१०
नाम जापकनि पर नहीं, मोर कटक को कोप।
अपर साधननि मारिहौं, निदरि लगाइ सुतोप २११
कर्मी ज्ञानी पूजका, सुनहु सकल दै कान।

रटहु नाम मम राज बसि, चाहहु जो कल्यान २१२
मोर राज्य कल्याण हित, कष्ट करहु जनि कोइ।
रटहु नाम सब काम प्रद, सतगुरु सन्मुख होइ २१३
मम जीवन श्रीनामहैं, रटौं तिन्हैं बशु याम।
प्रेमलता सु अनन्य गति, धारि हिये निष्काम॥२१४॥
सब ग्रन्थनिबिच ऐन मम, प्रगट लिख्यो तेहि माँहिं।
केवल नाम अधार एक, सुखद अपर कछु नाँहिं २१५
सुनो गुनो सोइ धरहु उर, रटहु नाम लवलाय।
हठ करि भोगहु कष्ट जनि, मम साशन दुखदाय ३१६
रोचक अपर भयानक. बचन न मोहि सुहाँहिं।
कहौं यथारथ नाम सम, सुखद न त्रिभुवन माँहिं २१७
भगति ज्ञान साधन कठिन कर्म धर्म दुखरूप।
तिन्हि सँग पचहिं ते जीव जड़, तजि श्रीनाम अनूप २१८
मोर मुख्य शिद्धान्त यह, सुनहु सु नामी लोग।
रटहु नाम परि हरि कठिन जप तप साधन योग २१९

परमारथ स्वारथ अपर, पर परमारथ सार।
श्री सियराम सुनाम यह, रटि उतरहु भवपार २२०
ग्यानी गुरुआ रोचकी. कर्मी गुरू भयान।
कहि कहि कथा अनेक विधि, फूँकत पापी कान २२१
डारिदेत भ्रमसिन्धु बिच, अबुध जनन भरमाय।
कर्म ज्ञान उपदेशि करि, देत सुनाम छुड़ाय ॥२२२॥
ते भागी मम दण्ड के, गुरुआ गुरू गमार।
कर्म ज्ञान बल नाम तजि जान चहहिं भवपार २२३
कहौं सपथ करि नाम तजि, मोहि न कछू सुहाय।
धर्म कठिन तिहुँ युगनि के, तेहि लगि दिये उठाय २२४
मम आज्ञा करि भंग जे, साधहिं साधन कर्म।
बूड़हिं ते भव सिन्धु बिच, पैहैं कबहुँ न नर्म २२५
मोरराज श्री नामरटि, जो सुख पैहैं लोग।
सो न ललहिं तिहुँ युगनि जन, साधि कठिन जप योग
गुरुआ गुरू मजूर तजि, तन पोशाकी बिचारि।

दुख पैहैं मम राज दोउ, कर्म ज्ञान शिर धारि २२७
सतगुरु खोजि सुकीजिये, जाके केवल नाम ।
प्रेमलता अवलम्ब दृढ़, रटैं बिलग बसुयाम २२८
साँचे श्री सतगुरुनि के, कहौं कछुक गुण भाखि ।
बचिहैं गुरुअनि ते सुजन, प्रेमलता उर राखि २२९
श्री सियराम सु नाम रस, रटि रटि पिअत सप्रेम ।
प्रेमलता त्रयकाण्ड तजि, बिपुल साधना नेम २३०
रटहिं रटावहिं नाम नित, मन बुधि चित करि थीर
सपनेहु नहिं आन गति, प्रेमलता अतिधीर २३१
ज्ञाता नाम परत्व के, त्राता जीवनि केर ।
भ्राता मोर सु परम प्रिय, दूरि बसौ बरु नेर २३२
शुभगुण धाम शुसील शुचि, सौम्य सुखद सब काहु
नाशहिं नाम रटाय रटि, आपन पर उर दाहु २३३
सन्तोषी निष्काम अति, नामरटन अधिकाय ।
अशन बयन सयनादि मित, त्यागेउ कर्म कषाय २३४

इत उत वहुत न धावहीं, इंद्रिनि के सुख लागि।
जेन केन बिधि उदर भरि, रहे नाम रस पागि २३५
राग रोष ईर्षादि मद, दम्भ कपट पाखण्ड।
तजेउ मोह लोभादि सब, रटि श्रीनाम प्रचण्ड २३६
नीति निपुण निज नेम दृढ़, सबके हित रत नाम।
प्रेमलता सु प्रशन्न चित, निबसत निर्जन ठाम २३७
शास्त्र सुबोध यथारथ, सारा सार बिबेक।
परमारथ स्वारथ तजे, कर्मा कर्म अनेक ॥२३८॥
गह्यो सार पहिचानि उर, पर परमारथ नाम।
रटहिं रटावहिं लाजतजि, घूमि घूमि ग्रह ग्राम २३९
कहनि रहनि करतूति इक, बिमल बिराग बिचार।
प्रेमलता सतसंग प्रिय, रटत नाम इकतार २४०
रशिक रँगीले चतुर बर, चाह चपलता हीन।
मन बच कर्म बिकार तजि, नामरटन रस लीन २४१
श्रीसियराम उपासक, अभय असोच अगेह।

प्रेमलता श्रीनामरत, त्यागि सकल सन्देह ॥२४२॥
बक्ता पर परमार्थ के, अङ्ग सु बैष्णव बेष।
प्रेमलता धारण किये, रटैं नाम तजि द्वेष ॥२४३॥
चिन्तहिं श्रीनामार्थ नित, प्रमुदित बैठि इकन्त।
बिधि निषेध परपञ्च तजि, प्रेमलता बुधिवन्त ॥२४४॥
एकभजन वर भावदृढ़, एक आश विश्वास।
प्रेमलता चातक सदृस, धरि जग कीन्ह प्रकाश ॥२४५॥
लच्छण श्री सतगुरुनि के, को कहि पावै पार।
प्रेमलता रत नामजे, सहित बिवेक बिचार ॥२४६॥
नामजापकनि की कथा, अकथ अगाध अपार।
प्रेमलता नहिं कहि सकहिं, सारद शेष हजार ॥२४७॥
नामो सतगुरु खोजि तेहि, दीजै तन मन भेट।
लीजै श्री सियराम यह, नामरटिय भरि पेट ॥२४८॥
कपटी गुरुवउ रटत बहु, नाम कामना हेत।
प्रेमलता पहिचानि तिन्हि, त्यागिय होइ सचेत ॥२४६॥

नकली वेष वनाय बहु, रटत नाम बनि सन्त ।
प्रेमलता जग ठगन हित, उघरत कपटी अन्त ॥२५०॥
नामपरत्व न बिदित तिन्हि, प्रभुको मोर प्रभाव ।
करत मनमुखी आचरण, भजन भावना चाव॥२५१॥
नाम आड़लै मन्मुखी, पोषत पापी देह ।
गुरुआगुरु प्रपंचरत, सतगुरु पद न सुनेह ॥ २५२ ॥
रस रस नाम छुड़ाइ मैं. तिन्हि दम्भिनि कहँ दण्ड ।
प्रेमलता दैहौं अवसि. भली भाँति परचण्ड ॥२५३॥
जे साँचे श्री नामके, जापक मन बच कर्म ।
प्रेमलता ते सतगुरु, जिन्हें न सपनेउ भर्म ॥२५४॥
साँचे सतगुरु खोजिये, तजि गुरु गुरुअनि भीर ।
प्रेमलता सुनि नाम श्रुति, रटिये करिमन थीर॥२५५॥
गुरु गुरुअनि के पेठियनि, सौदा सस्त बिकाय ।
कर्म ग्यान तप तामसी, सतगुरु लेत न ताय ॥२५६॥
भुसी कुसी कचकाच सम, गुरु गुरुअनि कर माल ।

जानत जे सतगुरुनि के. कृपापात्र कोउ लाल ॥२५७॥
सतगुरु जौहरि खोजिजे, नाम महामणि लीन।
श्रद्धासम्पति अर्पिते, जन जग परम प्रबीन ॥२५८॥
गृही गुरू नहिं कीजिये, जो गुणसागर होय।
करणी बिनु कथनी कथै, रह्यो मोह निशि सोय ॥२५९॥
हरै शिष्य उर को तिमिर करै प्रकाश अनूप।
जो न मिटै तिहुँ काल फिर, सो श्री सतगुरु भूप।२६०।
पच्छपात की बात तजि, जाति जमाति जवाल।
केवल नाम उचारहीं, विलग वैठि तिहुँकाल ॥२६१॥
नामिनि की बनिहैं अवसि, बात सु नाम प्रताप।
प्रेमलता मम राजमधि, रहिहैं ते निष्पाप ॥ २६२ ॥
साँचे नामिनि की करौं. सेवा सकल प्रकार।
प्रेमलता मैं दिवश निशि, मुदित सहित परिवार २६३
जय सियराम उचारहीं, श्री सतगुरु ते पाय।
सुख सुलहहिं ममराज ते, प्रेमलता अधिकाय ॥२६४॥

नामरटत महि अटत जे, ते मेरे प्रिय प्राण।
जी चाहै जहँतहँ रहैं, उन्हैं परम कल्याण॥ २६५॥
अस बिचारि रटिये सदा, श्री सियराम सु नाम।
प्रेमलता कल्याण निज, जो चाहौ सब ठाम॥२६६॥
यही परम सिद्धान्त मम, नाम रटै सब त्यागि।
तिन्हें न कबहूँ जारिहै, मोर कोप की आगि॥२६७॥
अपर जरत जरिहैं सकल, सदा त्यागि श्रीनाम।
साधि साधि साधन बिपुल. प्रेमलता नर बाम॥२६८॥
नामहिं जानो भक्ति बर, नामहिं ज्ञान निधान।
नामहिं कर्म उपासना, नामहिं जप तप ध्यान॥२६९॥
नामहिं जानो यज्ञ ब्रत, नामहिं तीरथ धाम।
नामहिं भाव सु भावना, जानहु ठाकुर ठाम॥२७०॥
नामहिं जानो सम सु दम, नामहिं बिरति बिबेक।
श्रवण मनन निदिध्यासन, जानहु नाम सु एक२७१
नामहिं जानो संग शुचि, नामहिं त्याग सु भाग।

नामहिं पूजा पाठ प्रिय, नाम अमल अनुराग ।२७२।
नामहिं जानो भजन बर, नाम सु सेवा टहल ।
नामहिं सहज समाधि बल, नामहिं निर्भय महल २७३
नामहिं जानहु सत्य शुचि, नामहिं शील शनेह ।
नामहिं जानहु धर्म धन, नामहिं दान सु देह ।२७४।
नामहिं जानो सुगति निज, नामहिं रच्छक मीत ।
नामहिं साहब ब्रह्म पर, जानहु परम अभीत ।।२७५।।
नामहिं जानहु साधु बुध. सतगुरु आतम राम ।
नामहिं जानो कल्पतरु, कामधेनु प्रद काम ।२७६।
नामहिं जानहु बेद बिधि. शास्त्र पुराण सु नाम ।
नामहिं अर्थ समर्थ सुख. नाम सुभग बिश्राम ।।२७७।।
नामहिं जानहु इष्ट निज. मिष्ट अभिष्ट सु दैन ।
नाम सुदिष्ट बलिष्ट बड़, हरन निष्ट मद मैन ।। २७८।।
नाम तितिक्षा जानहू, शिक्षा शुभ उपराम ।
दिक्षा बिनु इच्छा सु प्रद, जानहु सब बिधि नाम २७९

नामहिं संध्या तर्पण, गायत्री सतकर्म ।
नामहिं एक अधार दृढ़, लखहु अपर सब भर्म ।२८०।
नामहिं बिद्याबोध बर, चतुराई टकसार ।
नामहिं नृत्य सु गान गति, राग तान उपकार ॥२८१॥
नामहिं देव दयालु अति, नामहिं प्रवल सु भूत ।
नामहिं भोजन बसन बर, नामहिं सौदा सूत ॥२८२॥
नामहिं पूँजी अति अघट, नाम महा रुजिगार ।
नामहिं नगर सु पेठिया, नामहिं साहूकार ॥२८३॥
नामहिं रयासत नाम नृप, नाम बजीर प्रधान ।
नाम सहायक सबल हित, नाम प्राणके प्रान ।२८४।
नामहिं पवन प्रकाश जल, नामहिं महि अकाश ।
अहङ्कार मन बुद्धिचित, नामहिं हास हुलास ।२८५।
नामहिं रज तम सत अपर, गुणातीत अबिकार ।
नामहिं रबिशशिनखतनभ. जनउरकरहिंबिहार २८६
नामहिं मेवा पान फल. आम अँगूर अनार ।

नामहिं नव रस षष्ट रस, रंग रहस आधार ॥२८७॥
सागर सरिता कूप नद, नाद कथा आनन्द।
नमाहिं जानै, मुख्य इक, काब्य प्रबन्ध सु छन्द ।२८८।
फाग दिवारी दशहरा, भूलन जानहु नाम।
शुभदिन महिना बर्ष तिथि, नाम सकल सुख धाम २८९
सुख सम्पति उत्साह गति, मति रति नामहिं जानि।
रटो रटावहु सकल तजि. नामहिं नेम सु ठानि।२९०।
कहि आयों अरु कहत हों, कहिहौं बारम्बार।
मोरराज नहिं आन गति, केवल नाम अधार ॥२९१॥
नामरटन कौ कीजिये सबकोउ दृढ़ अभ्यास।
पैहौ सब सुख राजमम, नतरु भोगिहौ त्रास ॥२९२॥
मोहि दोष जनि दीजिये, भोगत निजकृत कर्म।
कोटिनि बिधि दुख पाइहौ, तजि श्रीनामसुधर्म ।२९३।
पर्मसुलभ उपदेश मम, जीवन श्री सियराम।
नाम सकल कल्याण प्रद. रटहिं न जे नर बाम।२९४।

पैहैंते तिहुँ काल दुख, दुसह घोर मम राज।
नाम रटे बिनु सुख कहाँ, दिनदिन शोकसमाज।२६५।
मैं सबकी हितकी कहौं, मानैं ते हित मोर।
चितदै श्रीसियराम नित, रटै सु बन्दी छोर॥२६६॥
मोहिं अधर्मी कहत जो, अज्ञानी मतिमन्द।
बिना बिचारे मूढ़ ते, परिहैं भवभ्रम फन्द॥२६७॥
मैं तो नाशि बिपत्ति सब, दुखद तिहूँ युग केरि।
बिनुश्रम सबकहँ परम गति, देउँ बिदूषहुँफेरि।२६८।
सुगम मार्ग परित्यागि शठ, नाम सु आज्ञा मोर।
करत कष्ट सुख लागि ते, सहिहैं सङ्कट घोर॥२६९॥
गुरु गुरुअनि के ज्ञान जनि, मानहु जो कल्यान।
चाहहुतोममराज सब, रटहु नाम तजि मान॥३००॥
गुरु गुरुआ तिहुँ युगनि के, कर्म कठिन शिर भार।
धरे फिरत दुख सहत नित, तजि श्रीनामउदार ३०१
सहि आये अरु सहत दुख, पुनि अब सहिहैं और।

गुरु गुरुआ श्री नाम तजि, पैहैं कतहुँ न ठौर ३०२
सुनिहैं जे तिन्हि की कथा, बिथा मूल नर नारि।
परिहैं तेउ भव जाल बिच, कामद नाम बिसारि ३०३
कर्मी ज्ञानी पूजकनि, तजि श्री सतगुरुदेव।
खोजि करियजेहिं दिवस निसि, नामरट न कीटेव ३०४
जिन्हिके लक्षण लिखेउँ कछु, ऊपर हृदय बिचारि
सीखौ तिन्हिते नाम रट, झटपट तन मन वारि ३०५
सीखौ सुनौ सु नामहीं, पढौ पढ़ावहु नाम।
रटौ रटावहु नाम नित, गुनो हिये तजि काम।३०६।
जपौ सु सुमिरौ नामहीं, नाचौ रटि रटि नाम।
बैठि परस्पर करहु ध्वनि, नामहिं की बशुयाम ३०७
गाओ हिलि मिलि नामहीं, गजौं करि करि सोर।
लोकलाज तजि दिवस निशि, सुनि सुसिखावन मोर ३०८
पूजौ नामहि जानि निज, परम सुहित ममराज।
ध्यावौ सेवौ नामहीं, निशि वासर तजि काज॥३०९॥

नाम रिझावौ बिलम तजि, रटि रटि बैठि इकन्त ।
आयू बीती जात बर, पछितैहौ पुनि अन्त ॥ ३१० ॥
करौ चेराई नामकी, वेगि न लावौ देर ।
काल बाज शिर ऊपर, घूमत है चहुँफेर ॥३११॥
भूलि रहे कसभर्म में, चेतौ गृही बिरक्त ।
आन युगनि के धर्म तजि, रटहु नाम सब फक्त ॥३१२॥
का पूजौ बहु देवतनि. का सेवौ ब्रत धाम ।
डोलौ तीर्थनि व्यर्थ कित, रटत न काहे नाम ॥३१३॥
काहे छाँटौ ज्ञान बहु, पाखण्डी पढ़ि बेद ।
नामरटे बिनु पाइहौ. उभय लोकमें खेद ॥ ३'४ ॥
वृथा कमावत कष्ट करि. कर्म धर्म ममराज ।
पूर न परिहै नामबिनु, रटे गरीब निवाज ॥ ३१५ ॥
का साजौ सुख साज बहु, महल चुनाय चुनाय ।
का सोओ सुख सेज पर, रटौ नाम लय लाय ॥३१६॥
खान पान रँग रागमें, भूले कित सब कोइ ।

रटहु न श्रीसियराम कस, जाते सब सुख होइ ।३१७।
बातें गढ़ि गढ़ि करहु जनि, वृथा जिन्दगी नाश ।
रटहु नाम जो, चहहु सुख, परिहरि भोगबिलास ३१८
पढ़ौ पढ़ावौ का बृथा, पोथिन गहहु सु सार ।
श्रीसियराम सुनाम यह, रटि उतरो भव पार ३१६
कहौं कहावौं काह अब, बार बार तजि लाज ।
नामरटे बिनु सुखनहीं, पैहौ कोइ ममराज ३२०
बर्ण आश्रमी सुनहु सब, मम आज्ञा दै कान ।
कहौं कोपि श्रीनाम बिनु, रटे न कहुँ कल्यान ३२१
सन्त विरक्तनि ते करौं, बिनय जोरि युग पानि ।
रटियरटाइय नाम नित, मुख्य धर्म मम जानि ३२२
गुरु गुरुआ षटदर्शनी, सबहिं कहौं समुझाइ ।
नामरटौ रटवावहू, सकल प्रपञ्च बिहाइ ॥३२३॥
नामरटत रटावते, सुख बिचरौ महि माँहिं ।
मोरराज दशहू दिशनि, नामिन कहँ भय नाँहिं ॥

अशन बसन पैहौ बिपुल, सुख सम्पति सनमान।
नाम रटत रटावते, उभय लोक कल्यान ॥३२५॥
जो न मानिहौ बिनयमम, तौ मैं विपुल उपाधि।
करिकरि दैहौं कष्टनित, उपजैहौं बहु ब्याधि ॥३२६॥
ताते बालक बिनय सुनि, रटिय रटाइय नाम।
मोर राज-तजि काम मद, कर्म धर्म दुख धाम ॥३२७॥
सबते न्यारे ह्वै रहौ, रटो नाम धरि टेक।
बिचरहुमहिमनमुदितनित, ममबलसहितबिबेक ॥३२८॥
सबसन कहौं पुकारि अब, सुनौ बचन मम मिष्ट।
सब मतबादी रटहु नित, नाम श्रिष्टके इष्ट ॥३२९॥
नामरटनकौ सकल कहँ, सब बिधि है अधिकार।
ताते पुनिपुनि कहत सब, लेहु सु नामाधार ॥३३०॥
राखौ मेरो मान सब, बर्तमान नृप जानि।
नतरु कष्ट दैहौं बिपुल, करिहौं सबहित हानि ३३१
रटो रटो हिलिमिलि सदा, श्री सियराम सु नाम।

प्रेमलतासम धारि प्रण, सुख पैहौ सब ठाम ॥३३२॥
असकहि बारम्बार कलि, लगेउ रटन सियराम।
सेवत परिकर युगइ मन, मोहादिक मदकाम ॥३३३॥
धन्य धन्य महराज कलि, कृपा सु सिन्धु उदार।
सबहिंसुखद निज राजजिन्हि, राखेउ नामाधार ३३४
कलियुग सम नहिं आनयुग, जीवनि सुख दातार
नाम रटत गति देत शुभ, बिनु जप योगाचार ३३५
जय जय कलि महराजकी, जय श्री नाम उदार।
प्रेमलता बिनु श्रमहिंजो. करत जनन भवपार ३३६
श्री कलियुग महराज की, निन्दा करहिं गमार।
प्रेमलता मति मन्द ते, अज्ञानी अबिचार ॥३३७॥
कर्म ज्ञान योगादि जे, साधन कठिन कराल।
साधत रहेउ सु सुगतिहित, जनकरि कष्ट बिशाल ३३८
लाखनिमें कोउ एक मुनि, लहत रहे जो भेद।
कलियुग सोइ सियराम रटि, पावत सकल अखेद ३३९

रटि उतरो भवपार सोइ, श्रीसियराम सुनाम।
बिनुश्रम कलियुग केरियह, कृपासकल सुखधाम ३४०
श्रीकलियुग महराज ते, बिनय करौं कर जोर।
भूल चूक तिहुँ कालकी, क्षमा कीजिये मोर ॥३४१॥
रटौं रटावौं नाम नित, दीजै यह बरदान।
प्रेमलतापर छोह करि, कलियुग कृपानिधान ॥३४२॥
प्रबल सु परिकर आपके, लोभ मोह मद काम।
बिपुल बरजिये बिकल मोहिं, करहिं न रटत सुनाम ॥
कलियुग कथित प्रसंग यह, लिखि जग कीनप्रकाश।
प्रेमलतापढ़ि गुनिसुजन, करहिं नाम अभ्यास ३४४
बर्तमान युग धर्म जो, जानहिं सन्त सुजान।
तेन बिदूषहिं मोहिं उर, जिन्हिके निर्मल ज्ञान।३४५॥
गुरु गुरुआ बहु मनमुखी, कथि२ नाना ज्ञान।
पटकत जीवनि शोकपथ, नाम छुड़ाय प्रधान ॥३४६॥
यहप्रसङ्ग पढ़ि सुनि सुजन, गुरु गुरुअनि के जाल।

फसहिंन भूलिहु पाइ श्री, सतगुरु परम कृपाल ३४७
सतगुरु करहिं निदेश सत, नाम यथारथ ज्ञान।
प्रेमलता सिद्धान्त सोइ, कलिकर मोद निधान ३४८
कर्म न ज्ञान न भक्ति कलि,जीवनि प्रद कल्यान।
प्रेमलता बुध कहत इक, नामाधार प्रधान॥ ३४९॥
कछुदिन पूजा ज्ञान शुभ, कर्म दिखाई देत।
आखिर होइहैं लुप्त सब, लखौ ग्रंथ करि चेत॥३५०॥
पाप पयोनिधि बढ़ि रह्यो, दिनदिन दशो दिशान।
पैरि२ बूड़हिं सकल, गुरु गुरुआ अज्ञान॥ ३५१॥
सतगुरु नाम जहाज पर, बैठे कहत पुकारि।
कर्मी ज्ञानी पूजकनि, बचिहौ नाम उचारि॥३५२॥
बैठो नाम जहाज पर, आइ चलो साकेत।
निर्भय श्रीसतगुरु कहत, चेतहु कस न अचेत॥३५३॥
सज्जन सुनि सतगुरु शबद,चेति सु सहित समाज।
बैठि चले परधाम सुख, निर्भय नाम जहाज॥३५४॥

मिलेउ जाइ सिय रामते, सतगुरु कृपा सु पाय।
नाम जहाज सु जीव चढ़ि, प्रेमलता हरषाय ॥३५५॥
नाश्यो आवागमन जग, जन्म मरन दुखरूप।
सतगुरु कृपा सु नाम रटि, पायो मोद अनूप॥३५६॥
बलिहारी सतगुरुनि की, लीजैं बारम्बार।
प्रेमलता रटवाइ जो, नाम करत भवपार ॥ ३५७ ॥
श्री सतगुरु पर दीजिये, तन मन धन सब वारि।
प्रेमलता जो नाम बल, देइ देत भवतारि ॥ ३५८ ॥
सतगुरु शब्द सु धारिउर, रटि श्री नाम अखंड।
प्रेमलता बिनुश्रम तरिय, पाप पयोधि प्रचंड॥ ३५९ ॥
धन्य धन्य सतगुरुनि की, महिमा अकथ अपार।
प्रेमलता किमि कहिसकै, अतिमति मंद गमार॥३६०॥
जिन्हिकी कृपा अहेतुकी, पाय तरे बहु जीव।
प्रेमलता रटि नाम सुख, मिले जाइ सिय पीव॥३६१॥
सतगुरु शब्द यथारथ, बोधक यह सु प्रसंग।

प्रेमलता पढ़ि गुनि सुजन, रटहिं सुनाम अभंग ३६२
दूषण तजि भूषण गहहिं, संत हंस सबिचार।
नाम रटहिं रटावहीं, प्रेमलता लखि सार॥ ३६३॥
दूषहिं बगुला काग जे, कर्मी ज्ञानी मूढ़।
प्रेमलता ते नाम गति, जानै कहा निगूढ़॥३६४॥
शुचि सन्तनि ते बीनती, करों उभय कर जोरि।
नामरटिय रटवाइये, सब सन नातो तोरि॥ ३६५॥
नाम रशिक जे सन्तजन, ते करि कृपा सुदान।
प्रेमलता कहँ दीजिये, नाम रटन दृढ़ ज्ञान॥ ३६६॥
नाम रशिक मम पूज्य प्रिय, तात मात गुरु भ्रात।
मीतशिरोमणि सकलबिधि, नामी मोहिं सुहात ३६७
नाम जापकनि कर चहै, कृपासु सीथप्रसाद।
सियालाल की शरण प्रद, प्रेमलता अह्लाद॥३६ ॥
नाम जापकनि हेत यह, रचेउ प्रसंग बिचारि।
प्रेमलता मिथिलासुमधि, नामकृपा हियधारि॥३६९॥

माघ शुक्ल तिथिपञ्चमी, ज्ञानकूपके तीर ।
प्रेमलता सु प्रसंग यह, पूरकीन धरि धीर ॥३७०॥

इति श्री जय सियराम नाम ध्वनि प्रचारक श्रीवैष्णव
धर्मावलम्बी परमहन्स श्री १०८ श्री सियालाल
शरण जी महाराज उपनाम 'श्रीप्रेमलता जू'
कृत श्री सतगुरु शब्द यथार्थज्ञान
प्रबोधिका समाप्त शुभम् ॥ ३ ॥

जयसियराम जयजय सियराम ।
जयसियराम जयजय सियराम ।
जयसियराम जयजय सियराम ।
जयसियराम जयजय सियराम ।
जयसियराम जयजय सियराम ।
जयसियराम जयजय सियराम ।

॥ अथ श्रीगुरुपदार्थ प्रबोधिका ॥

॥ दोहा ॥

प्रभुतौ साँचे भजन ते, जन पर राजी होत।
प्रेमलता मानत नहीं, जाति पाँति की छोत ॥ १ ॥
सियबर प्रेम प्रबाह में, लोक बेद की कानि।
प्रेमलता बहि जात सब, होय न कबहूँ हानि ॥ २ ॥
लोक बेद की लाजघन, छायेउ उर आकाश।
प्रेमलता प्रभुरूप रबि, देखि न पावहिं दास ॥ ३ ॥
प्रेमपवन अति प्रबल जब, उठै हिये घहराय।
प्रेमलता तब लाजघन, नशै स्वरूप लखाय ॥ ४ ॥
रटै नाम सुखधाम तजि, लोक बेद की लाज।
प्रेमलता उन्मत्त ह्वै, तब रीझैं रघुराज ॥ ५ ॥
भजन करत लाजै नहीं, लाजै करत कुकर्म।
मलता गाजै सदा, नामसु तजि बहु भर्म ॥ ६ ॥

प्रेम नगर में प्रभु बसैं, जाति पाँति ते दूर।
प्रेमलता लाजादि बड़, बिघन पंथ में भूरि ॥ ७ ॥
सबर भील अरु भालु कपि, लोक बेदबिधि हीन।
प्रेमलता लखिप्रेम प्रभु, सब कहँमिलि सुख दीन ॥ ८ ॥
जाति लाज गुण मूर्खता, दम्भादिक दुखधाम।
प्रेमलता परदा परे, किमि दरशैं सियराम ॥ ९ ॥
तजे मातुपितु जाति कुल, सुत बनिता भये सन्त।
प्रेमलता लागीरही, लोकलाज दुख वन्त ॥ १० ॥
दास बने सियराम के, जीवत जूठन खाय।
प्रेमलता तउ जाति को, जड़ सम्बन्ध न जाय ॥ ११ ॥
अच्युतगोत गुलाम सब, ऊँच नीच नहिं कोइ।
प्रेमलता कह भेद जो, सब ते नीचो सोइ ॥ १२ ॥
संसकार पद गोत इक, इष्ट धाम क्षेत्रादि।
प्रेमलता जो दो कहै, साधु भयो सो बादि ॥ १३ ॥
जाति पाँति जबलग लगी, तबलगि भयो न सन्त।

प्रेमलता भजनौ करत, द्रवत न श्रीसियकन्त ॥१४॥
कोटिन द्विज शिवलिङ्ग बहु, पूजै सालिग्राम ।
प्रेमलता बैष्णव स्वपच, तेहि सम ते न ललाम ॥१५॥
पुनर्जन्म ह्वै जात जब, साधु होत तजि गेह ।
प्रेमलता श्रुति कहहिं अस, करियन उर सन्देह ॥ १६॥
बर्णाश्रम ते पार सो, गयो भयो जो सन्त ।
प्रेमलता प्रभु रूप ध्रुव, आदि मध्य अरु अन्त ॥१७॥
साहबगोत गुलाम को, होत प्रगट यह बात ।
प्रेमलता नहिं भेद भ्रम, सेवक स्वामिहिं गात ॥ १८॥
रटै नाम प्रभु मय जगत, देखहिं सन्त सुधन्य ।
प्रेमलता प्रियपूज्य शुचि, तिन्ह सम सुखद न अन्य ।१६।
पंचतत्व की देह यह, सबकी एकै रंग ।
प्रेमलता लघु दीर्घ को, समुझौ ज्ञान प्रसंग ॥ २०॥
समदरशी शुचि नामरत, गत भव भेदा भेद ।
प्रेमलता प्रियप्रभुहिंते, सन्त सो गावत बेद ॥२१॥

सन्त किये प्रभु बिमुख बहु, जाति जनेऊ लाज।
प्रेमलता जो तिहुँ तजै, ते सेवक रघुराज ॥ २२ ॥
जाति जनेऊ लाज तजि, रटहिं नाम सियराम।
प्रेमलता मिलिसन्त सँग, ते जन जग सुखधाम ॥ २३ ॥
डारि जनेऊ मालइव, गर में गत अभिमान।
प्रेमलता तजिमूलते, लज्जा जाति सुजान ॥ २४ ॥
दास बन्यो तब कहँ रह्यो, वर्ण जाति कुल धर्म।
प्रेमलता रहिजात युग, प्रभुसेवा शुचिकर्म ॥ २५ ॥
सन्त सन्त सब एक हैं, ज्यों तुलसी के पात।
प्रेमलता छोटे बड़े, कहिबे के दरशात ॥ २६ ॥
जाति बुद्धि मन में धरै, करनी रहितबिचार।
प्रेमलता ते दोगिला, लखत न सारा सार ॥२७॥
भजनौ करत सु मनमुखी, आवत स्वाद न रंच।
प्रेमलता साधूबन्यो, नकली निरत प्रपंच ॥ २८ ॥
बेष बनायो साधुको, उदर भरन के काज।

प्रेमलता मन मलिनशिर, चढ़ीलोक की लाज ॥ २९ ॥
प्रभुके भये न घर रहे, दोउ दिशि ते गा सोय।
प्रेमलता तजिये तिन्हें, नकली साधू जोय ॥ ३० ॥
लोक बेद की लाज तजि, रटै नाम सबिचार।
प्रेमलता शुचिसाधुसो, गुरुमुख रहित बिकार ॥ ३१ ॥
नाम रटन इकसार जग, रटै खूब सोइ सन्त।
प्रेमलता पाखंड तजि, प्रमुदित बैठि इकन्त ॥ ३२ ॥
तिन्ह की जूठन पाइये, पीजै चरण सुधोइ।
प्रेमलता सेइय तिन्है, सब बिधिप्रभु प्रियजोइ ॥ ३३ ॥
सन्त अमानी नामरत, बिगत जाति अभिमान।
प्रेमलता दुर्लभ जगत, ते प्रभु के प्रियप्रान ॥ ३४ ॥
मन बच क्रम सियराम के, भये तजे त्रैलोक।
प्रेमलता निर्भय सदा, रटै नाम गत शोक ॥ ३५ ॥
साधुभये जगते गये, रहे नाम लयलाय।
प्रेमलता बिपतानशी, साँचे सतगुरु पाय ॥ ३६ ॥

साँचे सतगुरु बिनुमिले, बिनारटे सियराम ।
प्रेमलता पावत नहीं, सपनेउ मन बिश्राम ॥ ३७ ॥
सतगुरु की बलिजाइये, परिहरि भेदा भेद ।
प्रेमलता रटवाइ प्रभु, नाम नशावहिं खेद ॥३८॥
सतगुरु खोजिसु कीजिये, निर्बन्धन रतनाम ।
प्रेमलता बैष्णव धरम, पालक रसिक अकाम ॥ ३९ ॥
लोक बेद की लाजरजु, बँध्यो भजनपथ पङ्ग ।
प्रेमलता ते ठगगुरु, करिय न तिन्हि कर सङ्ग ॥ ४० ॥
कथनी कथुआ अमित गुरु, भजन देश में मूक ॥
प्रेमलता भरमाय जिव, देत कान में थूकि ॥ ४१ ॥
कनथुकुआ कोशिष्य जो, धोखे में होइ जायं ।
प्रेमलता तौ परिहरै, देइ न जन्म नशाय ॥ ४२ ॥
श्रीसियराम अनन्य शुचि, भजनानन्द अगेह ।
प्रेमलता पुनि करिय गुरु, रहित सकल सन्देह ॥ ४३ ॥
तनु त्यागी मन संग्रही, मन मलीन शुचि देह ।

प्रेमलता तनुदास अरु, मन स्वामी गुण गेह ॥ ४४ ॥
तनु हरि जन मन नारि जन, तनु पंडित मन मूढ़ ।
प्रेमलता मन भोगरत, तनु तप योगारूढ़ ॥ ४५ ॥
तनु राजा मन कङ्गला, तनु सुन्दर मन फीक ॥
प्रेमलता तनु साधु शुचि, मन खल कुटिल खटीक ॥४६॥
तनु सनमुख प्रभु बिमुख मन, तनु बैष्णव मन आन ।
प्रेमलता परम्हंस तनु, मन बायस बक स्वान ॥४७॥
तनु मौनी मन मुखर अति. तनु बूढ़ा मन ज्वान ।
प्रेमलता तनु सन्त सँग, मन घूमै चौगान ॥ ४८ ॥
तनु औरइ मन औरई, बचनकहै कछु और ।
प्रेमलता अस गुरुन के, शिष्यहोयँ ते चौर ॥ ४९ ॥
गुरु अज्ञानी शिष्य तस, दोउ जन गुरुता हीन ।
प्रेमलता दोउ मन्मुखी, जग प्रपंच में लीन ॥ ५० ॥
कनथुकुआ गुरु शिष्यबहु, किये ठगन संसार ।
प्रेमलता तनु पोषकी, रहित सु भजन विचार ॥५१॥

परमतत्व की बूझ नहिं, गुरु शिष उभय अयान।
प्रेमलता संसार फुर, मान्यो निज अज्ञान॥ ५२॥
झूठे गुरु शिष प्रगट बहु, भे तजि तजि गृहकाज।
प्रेमलता तनु पोषहीं, पहिरि सुबैष्णव साज॥५३॥
साँचे सतगुरु मिलहिं जो, तिनहिं भागबश आय।
प्रेमलता हरि मोहतम, देइँ सु तत्व लखाय॥५४॥
साँचे सतगुरु बिनु नहीं, जीवनको कल्यान।
प्रेमलता लखि बातफुर, समुझि फुकाइय कान॥५५॥
प्रभुगुरु सन्तन सम्प्रदै बञ्चक बेष बनाइ।
प्रेमलता लजवावहीं, मनमुखिया समुदाइ॥ ५६॥
परलोकी गुरु जहँ तहाँ, लोकी गुरु समुदाय।
प्रेमलता भये प्रगट जग, जीवदिये भरमाय॥५७॥
लोकीगुरु परलोकसुख, जानत नहिं मतिमन्द।
प्रेमलता जगजार महँ, फस्यो करै आनन्द॥५८॥
दाम चाम पट अशन ग्रह, बनितादिक बहु भोग।

प्रेमलता सेवत अधम, लोकी गुरु ठगि लोग ॥ ५९ ।
बाक्यज्ञान में निपुण अति, कहिकहि कथा अनेक ।
प्रेमलता बंचत जगहिं, रहित सु बिमल बिबेक ॥६०।
कथनी कथि २ शिषकरैं, हरत न संश्रिति शोक ।
प्रेमलता फुर भाषहीं लोकी गुरुआ लोक ॥ ६१ ॥
लोकीगुरुआ शोकप्रद, तजिये तेहि लखि हानि ।
प्रेमलता गुरु कीजिये, परलोकी पहिचानि ॥ ६२ ॥
लोकी गुरुकरि देत जो, अन्न बसन धन धाम ।
प्रेमलतासो ब्यर्थ सब, आदि मध्य परिणाम ॥६३।
ऊषर बोयोहोत है, लोकी गुरु को दान ।
प्रेमलता रहिये सदा, सावधान मतिमान ॥ ६४ ॥
परलोकी बैष्णव गुरु, खोजि सुलीजै ज्ञान ।
प्रेमलता तजिशंक तेहि, सर्बस दीजै दान ॥ ६५ ॥
परब्रह्म परमातमा, सियबल्लभ श्रीराम ।
प्रेमलता भंजन बिपति, सबप्रकार सुखधाम ॥६६।

नेतिनेति नित निगम बद, जेहि कर चरित अनन्त।
प्रेमलता सु लखावहीं, परलोकी गुरु सन्त ॥ ६७॥
नाम रटाय नशावहीं, बिनुश्रम मायाफन्द।
प्रेमलता निजरूप करि, देत परम आनन्द ॥६८॥
तन मन धन लै जननकर, प्रभुपथ परम पबित्र।
प्रेमलता सु लगावहीं, गावहिं नाम चरित्र ॥ ६९॥
लोकी लोगन देत गति, तन धन कुटुम समेत।
प्रेमलता अपनाइ गुरु, परलोकी निरहेत ॥ ७० ॥
परहित चिन्तहिं दिवश निशि, परलोकी गुरु साध।
प्रेमलता सहि कष्ट निज, हरहिं आनकी ब्याध॥७१॥
तनते मनते बचनते, करहिं बिमल उपदेश।
प्रेमलता रटवाइ प्रभु, नाम नशावहिं क्लेश ॥७२॥
शब्दचोट हनि खोलहीं, घट के पट दुखदाय।
प्रेमलता निजसम करहीं, कीट भृङ्ग के न्याय ॥७३॥
करत सु ज्ञान प्रकाश उर, मोह अँधार नशाय।

प्रेमलता दरशावहीं, निज पर रूप अमाय ॥७४॥
साँचे गुरुके बचन शर, बेधै उर जब आय।
प्रेमलता भागै भभरि, कामादिक दुखदाय ॥७५॥
साँचेगुरु के शब्द की, चोट बज्र की मार।
प्रेमलता जेहि उरलगी, चूर चूर करि डार ॥७६॥
शब्द सुभाला मारि उर, गुरु जेहि घायल कीन।
प्रेमलता ते अमर जन, भये सु प्रभु महँ लीन ॥७७॥
सतगुरु मारा सो जिया, युगयुग रहित कलेश।
प्रेमलता प्रमुदित सदा, पाइ सु नाम परेश ॥७८॥
रटत रटत नामहिं लह्यो, चंचल मन बिश्राम।
प्रेमलता मङ्गल सदा, मोद सु आठो याम ॥ ७६ ॥
नामै में दरशन लगे, रटत रटत सब लोक।
प्रेमलता सतगुरु कृपा, नाश्यो संश्रिति शोक ॥८०॥
नामै में रस है कह्यो, श्री गुरु करुणाकन्द।
प्रेमलता रटि प्रगट सो, लखि पायेउँ आनन्द ॥८१॥

श्री सियराम सुनामरटि, जो सुख देखत नैन।
प्रेमलता सो अकथ अति, कहि न सकै बिधि बैन ॥८२॥
मन गुण बानी ते परे, श्री साकेत सुधाम।
प्रेमलता जहँ बिहरहीं, दम्पति श्री सियराम ॥८३॥
अगुन सगुन औतार पति, औतारी श्रीराम।
प्रेमलता सिय स्वामिनी, शक्तिन पति छबि धाम ॥८४॥
बड़ भागिनि अलि सेवहीं, प्रमुदित अमित करोर।
प्रेमलता नहिं पुरुष गति, तजि श्री राम किशोर॥८५॥
दिब्य सु लीला दिब्य थल, दिब्य ज्ञान खुख भोग।
प्रेमलता अलि दिब्यसब, दिब्य देश गतरोग॥८६॥
दिब्य अशन भूषण बसन, खान पान ब्योहार।
प्रेमलता तरु दिब्य सब, रचना बिबिधि प्रकार॥८७॥
सब कहँ सर्ब समर्थ सब, चेतन दम्पति रूप।
प्रेमलता सेवहिंसुरुचि, लखि २ भाव अनूप॥ ८८।
नित्यधाम मुनिमन अगम, नित्य प्रकाश बिलास।

प्रेमलता मुद मङ्गल, नित्य सुनयो हुलास ॥ ८९॥
अमित भवन सुन्दर सुखद, सब ऋतु सर्ब प्रकार।
प्रेमलता तरु बाटिका, शोभित शुचि प्रति द्वार ॥९०॥
सरल बिशाल सु एकरँग, चौहट गली बजार।
प्रेमलता अतरनि सदा, सींचित रंच न छार ॥ ९१॥
त्रिबिधि पवन संतत बहैं, अगणित केतु पताक।
प्रेमलता फहरात नभ, लखि पुरछबि मन थाक ॥९२॥
शुचि जलधारैं ललित लघु, बह्यो करैं बशुयाम।
प्रेमलता गृह२गलिन, हाट बाट अभिराम ॥ ९३॥
ठाम ठाम प्रति बाटिकनि, जलसु यंत्र दिन राति।
प्रेमलता चालत रहहिं. रचना कही न जाति॥ ९४॥
बेलि बिटप फूले फरे, हरे सबन बहुरङ्ग।
प्रेमलता सोहहिं सुढँग, जनु रति अमित अनङ्ग॥९५॥
भवन भवन प्रति कलपतरु, कामधेनु प्रदकाम।
प्रेमलता नहिं जात कहि, अतिबिचित्र त्रित्राम ॥९६॥

कञ्चन मणि मुक्ता फटिक, रजत सुहीरा लाल।
प्रेमलता मय भवन महि, लखिमन होत निहाल ॥९७॥
लाजहिं सुखलखि अलिनिके, उमा रमा ब्रह्मानि।
प्रेमलता शचि सारदा, बहु बिनुमोल बिकानि ॥९८॥
यूथनि युत यूथेश्वरीं, राजहिं निजनिज कुञ्ज।
प्रेमलता प्रमुदित सदा, ललना गण सुख पुञ्ज ॥९९॥
बिचरहिं प्रमदा जहँ तहाँ, हिलिमिलि भरीं हुलाश।
प्रेमलता नव सप्त सब, साजे तनु सुख रास ॥१००॥
बीथिनि बाटनि बाटिकनि, बाजारनि बहु मंच।
प्रेमलता बिश्राम हित, बिछे प्रपंच न रंच ॥१०१॥
समय समय तहँ बैठि सुख, ललना गण समुदाइ।
प्रेमलता प्रभु चरित शुचि, कहहिंसुनहिं हरषाइ १०२
कहुँ २ बैठीं लतनि तर, कोकिल बैनी बाम।
प्रेमलता सु परस्पर, रटहिं रटावहिं नाम ॥१०३॥
तने बितान सु मारगनि, बेलिनि के सु बिशाल।

प्रेमलता फूलित फलित, सघन सुखद सब काल १०४
सुन्दर सुखद सुगन्धमय, रसमय गुणमय साज ।
प्रेमलता सब सकल बिधि, अनुपम अकथ समाज १०५
भूलहिं कुञ्ज निकुञ्ज अलि, गावहिं सरस सु राग ।
प्रेमलता को कहि सकै, तिन्हिकर भाग सोहाग १०६
बाहन अमित विमान बर, मन गति जाननि हार ।
प्रेमलता अलि अलिनि प्रति, इक २ चेतन सार १०७
तिन्हपर चढ़ि चढ़ि गगन पथ, बिचरहिं जहँ तहँ बाम ।
प्रेमलता अनुकूल सब, सुख सुतिनहिं सब ठाम १०८
मध्यनगर अनुपम सदन, कनक भवन जेहि नाम ।
प्रेमलता सोहत धवल, राजत जहँ सियराम ॥१०६॥
अतिउतंग बिस्तारमय, खचित सु रतन अमोल ।
प्रेमलता सुक सारिका, शृङ्गानि करहिं कलोल ॥११०॥
ध्वजपताक बहु बरण बर, फहरहिं नभ उरमाहिं ।
प्रेमलता बहु रूप धरि, खगपतिमनहु उड़ाहिं ॥१११॥

खिरकीं अमित सुहावनी, परे सुभग मणिजाल।
प्रेमलता सियपिय जहाँ सुख बैठहिं सँग बाल ॥११२॥
ललितझरोखा गोपुरनि, बाजे बिबिधि निशान।
प्रेमलता बाजहिं मधुर, समय समय सुख दान ॥११३॥
षोड़स ड्योढ़ी चौक नव, अतिबिशाल रमणीक।
प्रेमलता उपमा सकल, लखि लाजी भइ फीक ॥११४॥
ड्योढ़िनि २ सहचरीं, रक्षक परम प्रबीन।
प्रेमलता हाजिर सदा, रहहिं अमित आधीन ॥११५॥
मुख्य सुफाटक पूर्ब मुख, जेहिते ड्योढ़ी लाग।
प्रेमलता तहँ राजहीं, मुख्य अलीं बड़ भाग ॥११६॥
भोग बिभूतिनि भरिरह्यो, महल कहौं किमिगाय।
प्रेमलता अनुपम अकथ, महिमा सियरघुराय ॥ ११७॥
चौक चौक प्रति बेदिका, सुरतरु पारिसुजात।
प्रेमलता निरखत बने, कहत अगम दरशात ॥११८॥
कल्पलता छाई सघन, ललित मंडपाकर।

प्रेमलता तिन्ह तर लसै, सिंहासन सुखसार॥ ११६॥
भूषित बसननि आभरनि, शुचिसुगन्धमय सोह।
प्रेमलता चमरादि युत, सबबिधि सुख सन्दोह॥१२०॥
समय २ सब ठौर दोउ बैठहिं दै गरबाँहिं।
प्रेमलता अलि अमित छबि, हरखि निरखि बलि जाँहिं।
सकलकला गुणधाम अलि. कौतुक करहिं अपार।
प्रेमलता सुख लहहिं लखि, सुखसागर सरकार॥१२२॥
बिबिधिभाँति सेवहिं मुदित, प्रियापियहिं अलिपुञ्ज॥
प्रेमलता बड़भागिनी, बिहरहिं संग निकुञ्ज॥१२३॥
जुगवत रहहिं सु अलिनिरुख. जनपालक सियराम।
प्रेमलता सोइ करहिं जेहि,सुख पावहिं सब बाम॥१२४॥
कमलाकार सिंहासन, उपमा रहित बिशाल॥
प्रेमलता मधि चौक बिच, भूषितरत्न सुजाल॥१२५॥
कल्पसुतरुतर बेदिबर, राखी रुचिर बनाय।
प्रेमलता तेहि पर सदा, राजत जात न गाय॥१२६॥

तेहि सिंहासन बैठिप्रभु, दम्पति श्रीसियराम ।
प्रेमलता निरखारहीं, नेह न्याव यकयाम ॥ १२७ ॥
चन्द्रकलादिक सहचरीं, अगणित घेरहिं आय ।
प्रेमलता दरशावहीं, निज२गुण नचि गाय ॥ १२८ ॥
कोउ बीणा कोउ बाँसुरी, कोउ करताल मृदङ्ग ।
प्रेमलता मंजीर कोउ, कोउ सितार मुहचङ्ग ॥ १२९ ॥
सारङ्गी कर झाँझि कोउ, तानपुरा जलयंत्र ।
प्रेमलता सहनाइ कोउ, कोउ सुबतावतिमंत्र ॥ १३० ॥
निज२साज समाज सजि, प्रमुदित हिय हरषाइ ।
प्रेमलता सुरिझावहीं, बहुबिधिगाय बजाइ ॥ १३१ ॥
बहुतक चढ़ीं सुकर्णिकनि, सिंहासन चहुँ ओर ।
प्रेमलता अलि सेवहीं, रुखलखि युगल किशोर ॥ १३२ ॥
कोउ कर भूषण बसन कोउ, असन सुमेवा पान ।
प्रेमलता अलि अतर कोउ, चमर छत्रधनु बान ॥ १३३ ॥
कोउ रुमाल सूरज मुखी, ब्यजन छड़ी कोउ ढाल ।

प्रेमलता असि शक्ति कोउ, पीकदान मणिथाल ॥१३४॥
कोउ पुस्तक कोउपादुका, कोउ पदत्राण अमोल।
ेमलता आदर्श कोउ, बोलहिं हँसि मृदु बोल ॥१३५॥
मंगल बस्तुफुँदेल कोउ, भृङ्गारी सब साज।
प्रेमलता अलि माल कोउ, कोउ कर कञ्ज सुराज। ३६।
सुरतरु सुमन सुकेतिक, लिये खड़ीं भरि गोद।
प्रेमलता बर्षहिं हरषि निरखहिं युगल बिनोद ॥१३७॥
कोउ जलझारी आरती, तस्त लिये कोउ हाथ।
प्रेमलता धनिभाग अलि, सेवहिं सियरघुनाथ ॥१३८॥
निज२ सेवा निपुण सब, नागरि नवलानारि।
प्रेमलता जोरिहिं सदा जीवहिं नयन निहारि ॥१३६॥
दम्पति मुख शुचि पूर्ण शसि, अलिगण नयन चकोर।
प्रेमलता इकटक सकल, अवलोकहिं चहुँ ओर ॥१४०॥
नाचहिं नवला नारि बहु, थेइ थेइ कहि मृदु बयन।
प्रेमलता सुख पावहीं, लखि दोऊ सुख अयन ॥१४१॥

कहुँ कोउ बन्दी बनि आली, आइ करहिं गुण गान ।
प्रेमलतासु जुहार करि, बैठहिं पाइ सुदान ॥१४२॥
कहुँ कोउ मागध बेषधरि, आवहिं प्रमुदित धाम ।
प्रेमलता सुरिझाइ दोउ, बैठहिं लहि मन काम ॥१४३॥
कहुँ कोउ नट बनि आवहीं, करि बहुकला सुख्याल ।
प्रेमलता सुरिझावहीं जेहि तेहि बिधि सियलाल ।१४४।
कहुँ कोउ बनिसुकलन्दरी, आइ नचावहिं कीश ।
प्रेमलता बहु भाँतिपुनि, फिरहिं पाइ बकशीस ॥ १४५॥
यहि बिधिनाना बेषधरि, करहिं सुकौतुक बाल ।
प्रेमलता मुशिकान लखि, होहिं सुहिये निहाल ॥१४६॥
नित्य सुमंगल मोदनित, नित झूलन नित फाग ।
प्रेमलता नित नवल सुख, नित नित नव अनुराग १४७
नित्य दिवारी दशहरा, नित्य बधाई गान ।
प्रेमलता सब नित्य जहँ, मालिक मोद निधान ॥१४८॥
आज्ञा पाइसु सहचरीं, प्रमुदित निज २ कुञ्ज ।

प्रेमलता गइँ राखि उर, दम्पति पद सुख पुञ्ज ॥ १४९ ॥
मुख्य २ ललना नवल, रहीं सुसेवा माँहिं ।
प्रेमलता दोउ मुदित मन, बैठे दै गरबाँहिं ॥१५०॥
सिय बूझी मुशिकाइ पिय, तुमहिं काह प्रिय आहि ।
प्रेमलता पिय कहेउ हँसि, तुम्ह चाहहु पिय काहि ॥ १५१ ॥
बोलीं सिय पिय तुमहिं अरु, राउर राम सुनाम ।
प्रेमलता आधार मम, सब प्रकार सुखधाम ॥१५२॥
सुनि बोले पिय सुनहु अब, जो हमहीं अति पीय ।
प्रेमलता तुम्ह प्रथम पुनि, नाम तुम्हार सुसीय ॥१५३॥
पुनि सिय नाम सुसहित मम, रामनाम जो लेत ।
प्रेमलता सो परम प्रिय, सुनु प्रियजिमि साकेत ।१५४
युगल नाम रत प्रिय सदा, पुनि सम्बन्धी तोर ।
प्रेमलता कहुँ सौंह करि, प्राणहु ते प्रिय मोर ॥ १५५॥
तब गुण सुनत सुनावत, गावत जे हरषाइ ।
प्रेमलता प्रियमोरते, सब प्रकार सुखदाइ ॥ १५६॥

सिय सिय नाम उचारहीं, गावहिं तव गुणगाथ।
प्रेमलता मैं रहहुँ नित, प्यारीजू तिन्हि साथ ॥१५७॥
प्यारी जहँ तुम पगधरो, तहाँ धरौं मैं नैन।
प्रेमलता कछु चरणमें, गड़ि न जाय दुखदैन ॥१५८॥
तवसम्बन्धी बस्तु सब, प्यारी अतिप्रिय जानि।
प्रेमलता जुगवत रहहुँ, राखि सदा तेहिकानि ॥१५९॥
तेहिलगि तव नाते प्रिया, सब धामनि ते प्रीय।
प्रेमलता लागति सदा, मिथिला महि रमणीय ॥१६०
रटत नाम तहँ निवसि नित, जे जन तजि ग्रहकूप।
प्रेमलता ते हे प्रिया, सब बिधि मोर स्वरूप ॥ १६१ ॥
मैं नित मिथिला में बसौं, मिथिला मेरे हीय।
प्रेमलता साँची कहौं, तुमहिं लाड़िली सीय ॥१६२॥
मोहि भजै तजि तोहि तव, लघुता करै बखान।
प्रेमलता ते अधम नर, मन्द बुद्धि अज्ञान ॥१६३॥
तव परिकर जो कहहिं मोहिं, प्यारे तुम्ह सियदास।

प्रेमलता हौ सुनि सुमम, उर अति होत हुलास ॥१६४॥
यह रहस्य मम गुप्त अति, तब परिकर बिनु कोय।
प्रेमलता जानै नहीं, तेहि लगि उर भ्रम होय ॥१६५॥
प्यारी तेरो बिनु भये, बिना रटे तब नाम।
प्रेमलता सपनेउ न मोहिं, पावत जनमन बाम ॥१६६॥
तेरो व्है जो भजत तोहि, मैं तेहि हाथ बिकाउँ।
प्रेमलता दृढ़ पर्ण मम, सिय प्यारी बलि जाउँ ॥१६७॥
सिय प्यारी सुनि पिय बचन, अलिन सहित हरषाय।
प्रेमलता बर्षहिं सुमन बार बार बलिजाय ॥१६८॥
परिकर गण प्रभु बचन प्रिय, धरे दृढ़ाइसु हीय।
प्रेमलता आरूढ़ होइ, सेवहिं पद सिय पीय ॥१६९॥
बिहरहिं कहुँप्रिय बाटिकनि, रासिनि सँग बहु बाल।
प्रेमलता प्रमुदितहिये, सियरघुनन्दन लाल ॥१७०॥
भुक्तिमुक्ति गति भगति बहु, अणिमादिक रिधिशिद्धि।
प्रेमलता सिय चरणरज, सेइ लही सब बृद्धि ॥१७१॥

दुर्गा देवीं देव सब, सियपद रज धरि शीश।
प्रेमलता भये पुज्य जग, सबबिधि बाजत ईश ॥१७२॥
इनहींमें अरुझे सकल, मानि मुख्य जगजीव।
प्रेमलता पर रूप निज, बिसरिगये सियपीव॥१७३॥
तिन्हकर मन सपनेउँ नहीं, जात सुतेहि सुख ओर।
प्रेमलता जोलखहिं चख, रशिक सन्तचित चोर।१७४॥
मन्दमन्द मुशिकाय मुरि, हेरत जब जेहि ओर ।
प्रेमलता बिकिजातसो, लखिछबि युगल किशोर १७५
जब दोउ करत परस्पर, बतियाँ गरभुज डारि।
प्रेमलता रसमय मधुर, अतिसुख लहहिं सुनारि।१७६॥
झूलहिं कबहुँ हिंडोर दोउ, हिलि मिलि सजि शृङ्गार।
प्रेमलता चहुँओर अलि, गावहिं रागमलार॥१७७॥
कोउ अलि देत सुपेंगझुकि, हरपि सु सिय पिय अंग॥
प्रेमलता लिपटहिं बिहँसि, उपजहिं अदभुत रंग१७८
कबहुँसु चढ़ि बैठहिं सिखर, कनक भवन की जाय।

प्रेमलता सु उड़ावहीं, चंगादिक हरषाय ॥ १७६ ॥
सिय करधरि सुदिखावहीं, सहरपना चहुँ ओर ।
प्रेमलता मुशिकाय पिय, दशरथ राज किशोर। १८०।
देखिय कोट प्रकाशमय, भवन सुअमित करोर ।
प्रेमलता निवसहिं जहाँ, प्यारी परिकर तोर ॥ १८१॥
कुञ्जहिं खग जहँ तहँ अमित, गुञ्जहिं मधुप अनन्त।
प्रेमलता मम तोर जिमि, प्रिय गुण गावहिं सन्त १८२
सहरपना के बाहर, परम सुहावनि भूमि ।
प्रेमलता लखु प्रानप्रिय, रहे सुभगतरु भूमि ॥ १८३॥
बिरजाधार पुनीतलखु, प्यारी दक्षिण ओर ।
प्रेमलताबिचरहिंतटनि, सारसहंसचकोर ॥१८४॥
दरश परस पानादि जेहि, करि मोहिंपावत लोग।
प्रेमलता अलितोर तेहि. हेरहु प्रिया निसोग ॥१८५॥
संकुल बाग तड़ाग महि, पावनि सम चित चोर ।
प्रेमलता मिथिलेश जे, लखहु नचहिं बहुमोर।।१८६॥

बिबिध बरण के बिपुल तरु, फूले फरे सु सोह।
प्रेमलता अवलोकिये, प्यारी सुख सन्दोह ॥ १८७॥
बिबिधरंग के कमल कल, खिले सरनि लखुसीय ।
प्रेमलता झूमहिं मधुप, गुंजहिं मज्जहिं तीय ॥ १८८ ॥
यहि बिधिदेखि दिखाय प्रभु, पुरशोभा समुदाय ।
प्रेमलता किन्दुक सदन, चले उतरि हरषाय ॥ १८९ ॥
बैठे जाय सिंहासन, आईं अलीं अपार।
प्रेमलता तब उभयदल, साजि सुकिये तयार ॥१९०॥
मलयदंडधरि करनि कटि, कसि २ मुग्धसुबाल ।
प्रेमलताप्रमुदितखड़ीं, नाइ सु सियपद भाल ॥ १९१ ॥
पिय दिसितिमि प्रोढ़ा भईं, पाइ रजायसु खेल ।
प्रेमलता खेलनलगीं, दोउदिशिते तजि मेल ॥१९२॥
प्रेरहिं कोउरोकहिं अधर, मारहिं पुनि कोउधाइ ।
प्रेमलता अति चपल अलि, चपलौ ते अधिकाइ।१९३॥
हनहिं दंड कोउपगनि ते, कोउ गहि फेकहिं दूरि ।

प्रेमलता कोउ उड़हिं सँग, करहिं सुकौतुक भूरि।१६४।
कंदुक केलिसु कुशल सब, सिय बल मुग्ध सुपाइ ।
प्रेमलता जीतीं समर, पियदल दीन हराय ॥ १६५ ॥
परमकौतुकी सुख सदन, जनरुचि पालनहार ।
प्रेमलता सिय स्वामिनी, दशरथ राज कुमार ॥ १६६॥
बिपुल कुंज बन बाटिका, उपबन बाग तड़ाग ।
प्रेमलता सुबिहार थल, बिपुल भरे अनुराग ॥ १६७॥
अष्टकुंज द्वादश बिपिन, तिन्हिमें मुख्य सुजानि।
प्रेमलता नितनेम ते, जात जहाँ सुख खानि ॥१६८॥
कुंज कुंज प्रति प्रति समय, जाइ जाइ सियलाल ।
प्रेमलता दोउ करहिंजो, सो सुख जानैं बाल ॥१६६॥
नित्य चरित यह गोप्य अति, अष्टसुकुंज बिहार ।
प्रेमलता निरखहिंअलीं, जेहिकहँ जस अधिकार २००
याम याम प्रति कुञ्ज दोउ, करत सुचरित बिचित्र।
प्रेमलता देखहिं सुनहिं, गुनहि सुजीव पबित्र ॥२०१॥

अष्टयाम धरि नाम बर, भाविक रसिक सुसन्त ।
प्रेमलता रटि नाम यह, चिन्तहिं बैठि इकन्त ॥२०२॥
तद स्वरूप होइ जातते, जीवतही जग जीव ।
प्रेमलता तनु अछत बा, तजि पावहिं सियपीव ॥२०३
पै परलोकी गुरुबिना, मिले अगम सुखयेह ।
प्रेमलता यहि सुख बिना, पशुसम मानुष देह ॥२०४॥
अमित जन्मते जीव यह, भटकत योनि अनेक ।
प्रेमलता प्रभुबिमुख होइ, धरिउर मन मुखटेक ॥२०५॥
प्रभु कृपालु निज मिलन हित, नर शरीर निज दीन ।
प्रेमलता तेउ पाइसठ, कीन बिषय में लीन ॥२०६॥
सो परलोकी गुरुबिना, मिले न भयो बिवेक ।
प्रेमलता सेवत मखो, लोकी गुरु अनेक॥ २०७॥
झूठे को साँचो कहत; साँचेहि गये भुलाय ।
ेमलताहित अनहित, परत न तिन्हैं लखाय ॥२०८॥
झूठनि मिलि झूठा भयो, साँचो आतमरूप ।

प्रेमलता दुख सहत बहु, जीव पर्‌यो भव कूप ॥२०९॥
साँचे सतगुरु मिलहिं जब, साँचोज्ञान बताय।
प्रेमलता साँचो करैं, साँचेहि देहिं मिलाय ॥२१०॥
पुनि नपरै भवकूप तम, पाय परा रस रास।
प्रेमलता सदगुरु कृपा, पहुँचै पिय पुर खास ॥२११॥
सो रस जानहिं रशिक जन, सियसम्बन्धी सन्त।
प्रेमलता तिन्हके बिबश, रहत सदा सिय कन्त ॥२१२॥
सियके नाते करत प्रभु, परम कृपा सियनाथ।
प्रेमलताविनु गथ बिकत, सिय परिकरन सुहाथ।२१३।
प्रेमबिबश प्रभु रहत नित, प्राण प्रिया आधीन।
प्रेमलता रस भेद यह, जानहिं रसिक प्रवीन ॥२१४॥
अमरनि हूँ कहँ अगम अति, रसिकनको आनन्द।
प्रेमलता केहि भाँति तेहि, जानैंनर मतिमन्द ॥२१५॥
करै करोरनि जन्म तप, कर्म धर्म व्रत दान।
प्रेमलाता मख योग जप, तीर्थाटन दम ध्यान ॥२१६॥

साधिय ज्ञान विराग वहु, पूजा पाठ बिधान ।
प्रेमलता पढ़ि पढ़ि मरिय, सुनि २ बेद पुरान ॥२१७॥
भक्ति भावना करिय बहु, साधु सुसेवा टहल ॥
`मलता सखि भाव बिनु, जीव न पावहिं महल ।२१८।
बिनु सियनाते अगम यह, सखी भाव सुखधाम ॥
`मलता अलिभाव बिनु, अगम सु रहस ललाम २१६
रशिक जननकी सम्पति दम्पति रहस बिलाश ॥
प्रेमलता लखि जियहिं नित, सपने उनहिंपर आश२२०
आश त्राश जब लग लगी, सियबल्लभ बिनु और ।
प्रेमलतातबलगि अगम, कनक भवनकी पौर ।२२१
बातें बेष बनाय बरु, बने ब्रह्म जग कोय ।
प्रेमलता भरि देह पुनि. अवसि फजीहत होय।२२२।
ब्रह्म एक दूसर नहीं. गावत बेद पुरान ।
प्रेमलता जो दो कहहिं ते नर खल खर स्वान।२२३॥
झूठे ब्रह्म अनेक जग, साँचे यक सिय कन्त॥

प्रेमलता भव भय हरण, सेवत जेहि शुचिसन्त ॥२२४॥
सांचे ब्रह्महिं मिलन जो, चाहै कोउ नर नारि ॥
प्रेमलता तौ अस गुरुहिं, खोजिये बेगि बिचारि ।२२५।
श्रीसिय राम उपासक, दृढ़ अनन्य रतनाम ;
प्रेमलता मद मोह गत, निश्किन्चन सुखधाम २२६
रशिक शृँगारी सरलशुचि, समदरशी अनिकेत ।
प्रेमलता अलिभाव उर, ज्ञान बिचार समेत ।२२७।
कहनि रहनि यक चहनि यक सियपद पंकज प्रीति ॥
प्रेमलता पिय इष्टपुर, बिचरहिं सदा सनीति ॥२२८।
निज पर रूपप्रबोधक, सोधक मनचित अङ्ग ॥
प्रेमलता भावत सदा, नामजापकनि सङ्ग ॥२२९॥
नामहिं रटहिं रटावहीं, धामैंबसि बशुयाम ।
प्रेमलता माधूकरी, माँगिखात निष्काम ॥ २३० ॥
दम्भ द्वेष पाखंडगत, सब आचरण पुनीत ।
प्रेमलता वैष्णव धरम, अति प्रिय इन्द्री जीत ॥ २३१॥

जो कहुँ मिलै सु भाग बश, असगुरु देव कृपाल।
प्रेमलता तेहि सेइ सुख, जीव लहहिं ततकाल॥ २३२॥
काटि मोह बन्धन कठिन, निज सम करहिं तुरन्त।
प्रेमलता सामर्थ गुरु, अवगुण नाशि अनन्त॥ २३३॥
घरमें बा बैराग्य में, राखिय कहुँ यह देह।
प्रेमलता पै कीजिये, अस गुरु सद गुण गेह॥ २३४॥
गुरु तो सोइ जो शिष्य को, प्रभुते देइ मिलाय।
प्रेमलता उर बिमल करि, बहुबिधि ज्ञानदृढ़ाय।२३५।
दिखरावै नाना चरित, नाशि सकल पाखण्ड।
प्रेमलता उपदेश दै, जगते करै अदण्ड॥ २३६॥
जेन केन बिधि शिष्यते, रटवावै सियराम।
प्रेमलता सोइ सतगुरु, अपर न जाके काम॥ २३७॥
नामैं को गावैं सुनैं, रटैं रटावैं नाम।
प्रेमलता नामैं चरित, कहहिं श्रवण अभिराम।२३८।
नामरसिक अति प्रिय लगै, ढीलो रटै न नाम।

प्रेमलता भट भजन में, एकरङ्ग बशुयाम ॥ २३९ ॥
नामझड़ी भावै जिन्हैं, ज्यों भादों को मेह ।
प्रेमलता श्री नामपर, बारै सकल शनेह ॥ २४० ॥
डटत न हटत सु रटत जे, श्रीसियराम सुनाम ।
प्रेमलता बैठे रहत, बिलग मुदित बशुयाम ॥ २४१ ॥
अधम अभागी आलसी, कादर कूर कपूत ।
प्रेमलता तारहिं सबनि, नामरसिक अवधूत ॥ २४२ ॥
सबते नाम रटावहीं, जो कोउ आवै पास ।
प्रेमलता जहँ जाँयँ तहँ, नामै करैं प्रकाश ॥ २४३ ॥
नामशनेही होय कोउ, तेहि सन करैं सुप्रेम ।
प्रेमलता राखैं नहीं, ऊँच नीच को नेम ॥ २४४ ॥
लोक बेद को भयतज्यो, रँगे नाम के रंग ।
प्रेमलता सपनेउँ नहीं, करत कुसंगिनि संग ॥ २४५ ॥
नाम निशान बजावहीं, निशिदिन बैठि अशङ्क ।
प्रेमलता प्रियप्रभुहिं ते, परहिं न भव भ्रमपङ्क ॥ २४६ ॥

नामहिं गर्जहिं गर्ज तजि, धामकाम धन बाम।
प्रेमलता प्रिय पुज्यते, सन्त सुजग अभिराम ॥२४७॥
नामरटन मीठी लगै, जगत मिठाई फीक।
प्रेमलता अस सन्त की, सेवा सङ्गति नीक ॥ २४८ ॥
नामरटै ललकारि नित, ललकि ललकि लयलाय।
प्रेमलता अस सन्तकी, सेवा सब सुखदाय ॥ १४९ ॥
नामरटत अलसात नहिं, कामकरत अलसात।
प्रेमलता अस सन्तकी, बार बार बलिजात ॥२५०॥
नामरटन अति प्रिय जिन्हैं, कामिहिं प्रिय जिमिनारि।
प्रेमलता प्रभु रूपते, सन्त बदहिं श्रुतिचारि ॥ २५१ ॥
नामरटन लागीरहै, जिन्हि के मुख बशुयाम।
प्रेमलता अससन्त की, दर्शन जग अभिराम॥ २५२ ॥
नामरटत सबिचार जे, गुरुमुख पाइ सुभेद।
प्रेमलता अवधूत मत, धरि दृढ़ परम अखेद ॥२५३॥
स्वामीरामनन्द कृत, श्री बैष्णव मत सार।

प्रेमलता श्री नामको, जेहि महँ मुख्य अधार ॥ २५४ ॥
भिक्षा बृत्ति पवित्र अति गर गुदरी सिर टोप।
प्रेमलता कर खप्पर, नामरटैं तजि कोप ॥ २५५ ॥
कंठी तिलक कमंडल, अचला युग कोपीन।
प्रेमलता राखैं सदा, युगल नाम लयलीन ॥ २५६ ॥
रसिक भाव निष्काम मन, नाम रटन अधिकाय।
प्रेमलता सु प्रबोधघन, अचल अछोभ अमाय। २५७
माँगिखात माधूकरी, वैष्णव द्वार सुजाय।
प्रेमलता सह भावना, रटै नाम लयलाय ॥ २५८ ॥
यही मुख्य अवधूतमत, श्री बैष्णवी रसाल।
प्रेमलता निरुपाधि जेहि, रक्षक नामकृपाल ॥ २५९ ॥
परम अगम अवधूतमत, धारणकरि निरबाह।
प्रेमलता तसु सुगम जो, द्रवैं जानकीनाह ॥ २६० ॥
यह मत निबहैतब सदा, रटै खूब सियराम।
प्रेमलता सबिचार तजि, योग भोग जग काम ॥ २६१ ॥

परमहंस अवधूतजो, माँगिखाय इकबार।
प्रेमलता बसि बिलग नित, रटै नाम इकतार।२६२।
काहुइ ते नहिं मेल बहु, कौतुक जगत प्रपञ्च।
प्रेमलता परित्यागि नित, युगल नाम धनसञ्च॥२६३॥
गुरुप्रद बैष्णव बेष तेहि, धारण करहिं सप्रेम।
प्रेमलता तजि कर्म बहु, नामैं रटैं सनेम॥ २६४॥
इष्टबोध सम्पन्न शुचि, ज्ञान बिबेक बिराग।
प्रेमलता अवधूत ते, सत्य नाम रस पाग॥ २६५॥
पहिरि गूदरी टोप शिर, झूठे जग अवधूत।
प्रेमलता होइहैं बिपुल, कायर कूर कपूत॥ २६६
खाय खाय सूतहिं परे, नाम शनेह सुहीन।
प्रेमलता सठ मनमुखी, जग प्रपंच महँ लीन॥२६७॥
कथैं मनमुखी ज्ञान बहु, लाजहिं रटत सुनाम।
प्रेमलता अवधूत ते, झूठे दम्भी बाम॥ २६८॥
नाम शनेह सुहीनजे, परमहंस अवधूत।

प्रेमलता बनिजाँयँ ते, साक्षात यमदूत ॥ २६९ ॥
झूठे साँचेरहत नहिं, दुरे कहूँ लखिजात।
प्रेमलता झूठे जरै, साँचे सीतलगात ॥ २७० ॥
साँचे नाम उचारहीं, निशि बासर तजि बाद।
प्रेमलता सेइय तिन्हैं, पैहो अनुपम स्वाद॥२७१॥
मन मानै तौ लीजिये, तिन्हसन शुभउपदेश।
प्रेमलता कंठी तिलक, नामसु बैष्णव बेष ॥२७२॥
नामरटै रटवाहीं, नाशैं सकल गलानि।
प्रेमलता गुरु देवसोइ, करिय बेगिपहिचानि॥२७३॥
हाड़ चामकी देह यह, लघुजीवन सबिकार।
प्रेमलता करि बेगिगुरु, रटिये नाम उदार ॥२७४॥
सोइ गुरुदेव उदार जो, रटै रटावै नाम।
प्रेमलता तेहि की शरण, लीजै तजि जग काम॥२७५॥
गुरुतो कीजै सूरमा, कामादिक रिपुमारि।
प्रेमलता रटवाय प्रभु, नाम देहिं भव तारि।२७६॥

नामरटैया करिय गुरु, तरिय भवहिं पद सेइ।
प्रेमलता शिरधरि करिये, जो कछु आयसु देइ॥२७५॥
नामरटैया गुरुहिं तजि, सब गुरु पाथरनाव।
प्रेमलता तेहि पर सुचढ़ि, नाहक तनु न नशाव॥२७८॥
नामरटैया गुरु बिना, तरहिं न कलि भव जीव।
प्रेमलता पावैं नहीं, सपनेउँ श्रीसियपीव॥२७९॥
बह्योजात जो आपही, लोकी गुरु भवधार।
प्रेमलता तेहि शरण कोउ, कबहुँ किउतरयोपार॥२८०॥
आपडुबन्ते पाँड़िया, लै डूबैं यजमान।
प्रेमलता तिमिजानिजिय, लोकी गुरु अज्ञान॥२८१॥
असगुरु पाइ न लहहिं शिषि, सुख सपनेउँ बिश्राम।
प्रेमलता गुरु शिष्यदोउ, जैहैं अन्तक धाम॥२८२॥
गुरुजी लरैं मुकद्दमा, चेला जोतै खेत।
प्रेमलता मठबन्दकरि, स्वारथ बिबश अचेत॥२८३॥
ठाकुर जी भूखन मरैं, साधू फिरि फिरि जाँयँ।

प्रेमलता गुरु शिष्यदोउ, अन्तै मौज उड़ायँ ॥२८४॥
ऐसे गुरु ते मंत्र जो. लेत देत कछु दान।
प्रेमलता दोउ व्यर्थ जिमि, ऊपर बोयो धान ॥२८५॥
बार बार कह टेरिमैं, कहिहौं कहत बजाय।
प्रेमलता गुरु कीजिये, परलोकी सुखदाय ॥ २८६ ॥
गुरुबोरैं तारैंगुरु, दोउ वातें गुरुहाथ।
प्रेमलता तारक गुरुहिं, खोजि सुदीजै माथ ॥२८७॥
तारण एक सुतरण इक, तारण तरण सु एक।
प्रेमलता जगत्रिबिधि गुरु, करिये बूझि बिबेक ॥२८८॥
तारण व्यास पुराणिक, कहि कहि बहु इतिहास।
प्रेमलता तारत परहिं, आप सहहिं भव त्राश ॥२८६॥
वाक्यज्ञान में निपुण अति, पंडित करनीं हीन।
प्रेमलता को सुख लह्यो, असगुरु करि मतिदीन २६०
तरण बैठि एकान्तकहुँ, जपि अजपा करि ध्यान।
प्रेमलता निज तरि मर्यो, कीन्ह न पर कल्यान २६१

ज्ञान ध्यान जप तप न कलि, साधहिं तेनर क्रूर।
प्रेमलता लखि स्वारथी, रहिये तिन्हिते दूर ॥२६२॥
तीसर तारण तरण गुरु, नामरँगीले सन्त।
प्रेमलता तब मिलहिं जब, द्रवहिं जानकी कन्त।२६३।
आपतरैं सियराम रटि, तारैंपरहिं सुनाय।
प्रेमलता तारण तरण, सोगुरु जगत कहाय।२६४।
रटैं रटावैं सोर करि, सुनैं सुनावैं नाम।
प्रेमलता ते धन्य जग, साधु गुरू सुखधाम ॥२६५॥
सोइ पंडित सोइ सन्त गुरु, दुर्लभ या संसार।
प्रेमलता प्रिय पुज्य सोइ, रटहिं जो नाम उदार।२६६।
ज्ञानी ध्यानी धनिक सोइ, ऊँच अमर अभिराम।
प्रेमलता लयलाय जो, रटहिं सदा सियराम।२६७।
रटत नाम खटका रहित, अच्युत कुलमें आय।
प्रेमलता तेहि सन्त की, बार बार बलिजाय ॥२६८॥
जेहि के सबविधि एक दृढ, नामहिं कर अवलम्भ।

प्रेमलता दुखसुखसरिस, समुझिरटैं निरदम्भ ॥२९९॥
जाति पाँति अवगुन लखै, तेहि जन में जो कोइ।
प्रेमलता पावै नहीं, सपनेउँ शुभगति सोइ ॥३००॥
सन्तनि में नहिं लखहिं ते, जाति दोष अज्ञान।
प्रेमलता जिन्हि परम प्रिय, लागत निज कल्यान।३०१।
सन्तनिहू में पुज्य ते, सब बिधि रटहिं जे नाम।
प्रेमलता सेइय सदा, तिनहि जानि सियराम।३०२।
तेहि गुरु करिये अरपि सब, जन तन मन धन धाम।
प्रेमलता सुनि शुचिसुसिख, पाइय मोद ललाम।३०३।
नामरटैया सन्त की, सर वर करैं न कोय॥
प्रेमलता सुर शिद्ध मुनि, शिव बिरंचि किनहोय ३०४
जीवन को कल्याणप्रद, कलि सियराम सुनाम।
प्रेमलता गुरुदेव कै, नाम रसिक निष्काम।।३०५॥
विनुगुरु रटहिंजे नाम जन, मनमुख करि करि नेम।
प्रेमलता उपजत नहीं, तेहिलगि पावन प्रेम॥३०६॥

प्रभुकी बाँधी रीति यह, मेटि सकै नहिं कोय ।
प्रेमलता बिनुगुरु किये, काहुइ सुख नहिं होय॥३०७॥
आपौ प्रभु नरनाट्य जब, करत भूमि में आय ।
प्रेमलता मुनि कौशिकहिं लेत सुगुरू वनाय ।३०८।
श्री बैष्णवसु बिरक्त शुचि, नामरसिक गतमोह ।
प्रेमलता गुरुकीजिये तजि बिलम्ब करि छोह ।३०९।
गेही गुरू न करिय जो, बिधिसम पंडित होय ।
प्रेमलता लै बूड़िहैं, भवनिधि में तोहि सोय ॥३१०॥
प्रभुहित त्रृणसम त्यागि जो, तन धन धरनी धाम ।
प्रेमलता सियराम यह, नामरटहिं बशुयाम॥ ३११ ॥
निज पर रूप सु बोधउर, बीतराग रत नीति ।
प्रेमलता लयलाय नित, रटहिं सु नाम सप्रीति॥३१२॥
जग्यो मोहनिशि नाम रटि, जगते भयो निकाम ।
प्रेमलता अबलम्ब जेहि, केवल श्रीसियराम ॥३१३॥
जीवन के उध्दारहित. करहिं उपाय अनेक ।

प्रेमलता सहि कष्ट निज, रटहिं नाम धरिटेक॥३१४॥
नामरटावैंसोइ गुरु, रटैं नाम शिषिसोइ।
प्रेमलता तारण तरण, तेइ गुरु चेला दोइ ॥३१५॥
शिष्य गुकार सु निविड़तम, गुरु रुकार परकाश।
प्रेमलता गुरु मिलत ही, तुरत होइ तमनास ॥३१६॥
शिषिमें जो शिषिता नहीं, गुरुता नहि गुरुमाहिं।
प्रेमलता तौ नष्ट दोउ, भवनिधि गोताखाहिं ॥३१७॥
गुरु में गुरुता होइतौ सिष्यहि करै सुजान।
प्रेमलता गुरुमूर्ख तौ, दोउकर नहिं कल्यान॥३१८॥
सुख दुख प्रद सब भाँति गुरु, अस बिचारि मनमाहिं।
प्रेमलता गहि लीजिये, सुखद गुरु की बाँहिं॥३१९॥
जाति पाँति गुरु में नहीं, लखै लखै गुरु ज्ञान।
प्रेमलता शुचि शिष्यसोइ, पावै कलि कल्यान॥३२०॥
गुरु भगवत की जाति नहिं, गुरुता प्रभुता जोय।
प्रेमलता सब शंक तजि, रहिये तिन्हि कर होय ३२१

श्री बैष्णव गुरुता सहित, नाम रसिक गुण गेह।
प्रेमलता अस सन्त गुरु करिये तजि सन्देह ॥३२२॥
नाम रटैया सन्त गुरु, जिन्हि के सो जग धन्य।
प्रेमलता परधाम ते, जैहैं जीव न अन्य ॥३२३॥
सोइ तरिहैं भवशिन्धु कलि, पैहैं श्री सियकन्त।
प्रेमलता जिन्हि के गुरु, नामरटैया सन्त ॥३२४॥
सोइ सुखिया शुचि ऊँच सोइ, जग जीवन फललीन।
प्रेमलता सिखमानिजो, नामरशिक गुरुकीन ॥३२५॥
सोइ ज्ञानी गुण गेह सोइ, धर्म कर्म सब कीन।
प्रेमलता जिन्हि के गुरु, सियाराम लयलीन ॥३२६॥
सोइ पंडित सोइ पारखी, सोइ चैतन्य सुजान।
प्रेमलता जेहि के गुरु, करत नाम रस पान ॥३२७॥
जोग यग्य आचार ब्रत, जप तप तीरथ दान।
प्रेमलता सब कीन जो, रटत नाम सुनि कान ॥३२८॥
सोइ पैहैं गति भगति रति, प्रभुपद लोकसुमान।

प्रेमलता गुरु कीन जो, नाम रसिक सुख दान ॥३२६॥
उभयलोक सोइजन सुखी, व्है हैं गावत बेद ।
प्रेमलता जे करहिं गुरु, नामसु रसिक अखेद ॥३३॥
गुरु सुपदार्थ प्रबोधिका, दोहा त्रयसत तीश ।
प्रेमलता पढ़ि सुनि गुनहिं, ते पैहैं सियईश ॥३३१॥
यहि बिधि सुनिगुनि अवसि जन, करिहैं सतगुरु चीनि।
प्रेमलता तरिहैं भवहिं, जीवन लखि दिन तीनि ॥३३२॥
श्रीगुरु कृपा प्रसाद लहि, श्रीमिथिला मधि खाश ।
प्रेमलता निज मति सरिस, बिरचिसु कीन प्रकाश ३३३
शाल चौहत्तर मास मधु, सित त्रयदशि गुरुबार ।
प्रेमलता रचि कीन यह, ग्रंथ प्रगट सुखसार ॥ ३३४॥
सुनिगुनि सोधिय सुजनमम, भूलचूक गुण ग्राम ।
प्रेमलतहि बरदीजिये, गुरुपद रति रट नाम ॥३३५॥

क०—नाम सियाराम से न ब्रह्म रामरूप तुल्य सीय सी न शक्ति वीर वाँकुरे न काल से । भर्त से न भ्रात अपर दास हनूमान से न सन्त से कृपाल भूप जनक महीपाल से ॥ भक्ति से न दिव्य नयन

ज्ञान औ विचार से न त्याग से प्रमोद पर्म शोक मोह जाल से। देव गुरुदेव से न प्रेमलता तीनिलोक तारण भवसिन्धु ते कथा न भक्तमाल से ॥ १ ॥

क०—सज्जन में सन्त संग रंगन में राम रंग गंगन में देवसरि धवल धार वही है। नामन में रामनाम ग्रामन में तीनि मुख्य तीरथ प्रयाग अपर सप्तपुरी सही है। मंत्रन में राजमंत्र तिलकन में ऊर्धपुंड गाथन में रामायण तुलसिदास कही है। भूमिन में प्रेमलता जीवन उद्धार हेत तैसही अपेक्ष दिब्य मिथिला की मही है ॥ २ ॥

इति श्री अनन्त श्री स्वामी श्रीरामबल्लभा शरण जी महा-
राज श्रीअवध श्री सतगुरु सदन निवासी 'जूके कृपा
पात्र जय सियराम जय जय सियराम नाम
ध्वनि प्रचारक श्री वैष्णव धर्मावलम्बी
परमहंस श्री १०८ सियालाल शरण
जी महाराज कृत गुरु पदार्थ
प्रवोधिका समाप्तः ॥३॥

जय सियराम जयजय सियराम।
जय सियराम जयजय सियराम॥
जय सियराम जयजय सियराम।
जय सियराम जयजय सियराम॥

अथ श्री सीथप्रसादी माहात्म्य॥

दोहा।

लरिका युवतिनि केर मुख, चाटत कंठ लगाय।
सन्त गुरूनि के सीथ शुचि, पावत शठ अनखाय॥ १॥
हरि गुरु सन्त प्रसाद ते, जोनर करहिं गलानि।
खर कूकर सूकर बपुष, धरहिं होय हित हानि॥ २॥
सन्तनि मुख निवसति सदा, सीतापति सुखकन्द।
ता मुखकी जूठनि विसद, खात लजहिं मतिमन्द॥३॥
सन्तसीथ चरणोदक, हरण अमङ्गल भार।
पावत होत सु विमल उर, ज्ञान विवेक विचार॥ ४॥
सन्तन के मुख विमल ज्यों, प्रभु चरित्र रविधाम।
बोलहिं बचन यथारथ, सुमिरहिं कै सियराम॥ ५॥
हरहिं मोह अज्ञान सब, कहिकहि वचन रसाल।

जा जा कहि बाहिरि करत, लखि असाहि तनु खीन।
तेहि अघ पावत स्वान तनु, घर घर घूमत दीन॥ १४॥
सन्त प्रभाव न जान सठ, ग्यान विचार सु हीन।
निज तनु पोषक मोह बश, करनी महा मलीन॥ १५॥
ते किमि जानहिं साधु गुरु, महिमा अगम अपार।
नखशिख बूड़े मोहसर, लखहिं न सारा सार॥ १६॥
सन्तसंग विनु अगम अति, विमल सु ज्ञान विचार।
तेहि बिनु पाव न जीव सुख, नशत न मोह अँधार।१७।
सन्त संग विनु योग ब्रत, जप तप संयम नेम।
करत कठिन ध्यानादि दम, तदपि न पावत छेम॥१८॥
घरहु तज्यो तो का भयो, मिट्यो न जाति स्वभाव।
भजे न सीताराम जो, अखिल विश्व के राव॥ १६॥
हरि गुरु सन्त प्रसाद कहँ, तरस्यो कवहुँ न मूढ़।
मर्यो बजावत गाल सठ, पाई गति न सुगूढ़॥२०॥
लोहा पारस निकट जिमि, रह्यो राखि कछु बीच।

निजसम करि दरसावहीं, प्रेमलता सियलाल ॥ ६॥
कामधेनु सतकोटि सम, सुखद सन्त सतसङ्ग ।
सफल जन्म होइ जात जग, दरसत नाना रङ्ग ॥ ७॥
सन्त सभा सेई नहीं, रटे न श्री सियराम ।
नरशरीर धरि बादि जग, नाशेउ जन्म तमाम ॥ ८॥
सन्तसीथ पाये नहीं, पिये न गुरुपद धोय ।
रटे न श्रीसियराम सठ, गयो जन्म जग खोय ॥९॥
जातिभार माथे धर्‌यो, हम हम करत अयान ।
रटत न श्रीसियराम मुख, सेइसु सन्त सुजान ॥१०॥
करत बात बहु ज्ञान की, मनमलीन रतकाम ।
लोभग्रसे नाचत सदा, मर्कट इव हितदाम ॥११॥
मोटे चूतर पेट बड़, चलत फुलाये गाल ।
कूटि भर्‌यो अभिमानजनु, नखशिख खैंचि सुखाल ।१२।
झीनी काया सन्तकी, देखि करत त्रृसकार ।
फिरत कङ्गला बहुत अस, मागत भीख बजार ॥ १३॥

तेहि लगि नहिं कञ्चनभयो, तिमि सन्तनि में नीच।२१।
सन्तसीथ चरणोदक, सेवन करत गलानि।
छाँटत मनमुख ग्यानबहु, जाति बुद्धिउर आनि॥२२॥
सन्तसीथ चरणोदक, नाम रूप सियकन्त।
जिन्हें न प्रिय तजिये तिन्हें, गृही होय बा सन्त॥ २३॥
बेष विलोकि न भूलिये, समझि करिय सतसङ्ग।
बादन में नहिं सारप्रिय, होत भजन में भङ्ग॥२४॥
वैष्णव वेष बनाइ बहु, बञ्चक विषयी लोग।
तनु पोषहिं ठगि ठगि जगत, करि२ विबिधि प्रयोग।२५।
रामउपासक थोर बहु, दाम काम के दास।
समझि बूझि मिलिये तिन्हें, उपजावत उर त्रास॥२६॥
हँसहिं ठठाय कुबाक कहि, तन में भर्यो गरूर।
दास कहावत रामके, केवल दाममजूर॥ २७॥
धाम काम रत दिवस निशि, इन्द्रिनि के सुखहेत।
साधु सन्त आवत तिन्हें, कोपि ताड़ना देत॥२८॥

अहंकार उर साधुहम, ये सब साधू नाहिं।
फिरहिं उदर हित जहँतहाँ, पहिरि वेष जगमाहिं ।२९।
करहिं दण्डवत नायशिर, सन्त बिरक्त सु आय।
चितवत तिन्हें न मोह वश, बैठो गालफुलाय ॥ ३० ॥
साधु कहाय न सेवत, साधु सन्तधन पाय।
प्रेमलता दुख दुसह सो, सहिहैं यमपुर जाय ॥ ३१ ॥
बृथा तज्यो घर ज्ञान बिनु, सेये जो न सु सन्त।
रटे न श्री सियराम मुख, कबहूँ बैठि इकन्त ॥ ३२ ॥
गेह तजै तौ हरि भजै, सेवै सदगुरु सन्त।
खायसीथ भरि उदर तजि, जाति बुद्धि दुखवन्त ३३
घर तजिकै घरघर फिरैं, बाँधि कुटी अस्थान।
सेवत सन्त न भजत हरि, प्रेमलता अज्ञान ॥ ३४ ॥
फक्कड़ कहावत जगत में. घरमें राखत राँड़ ।
हरि गुरु बिमुख अधर्म रत, बेषधरे जनु भाँड़ ॥३५॥
जो न कियो तप भजन तौ, घरही तजि का कीन।

पोष्यौ निजतनु स्वान इव, करिकरि काज मलीन।३६।
घरछाँड़े सुख होय जब, भजनकरै दिनराति।
प्रेमलता मन मुदित महि, विचरै तजि मद जाति।३७।
खप्पर झोरी काँखतर, गर गुदरी शिर टोप।
तिलक छाप कंठी युगल, रटै नाम तजि कोप।३८।
अचला डोर कमंडल, साफी दुइ कोपीन।
माला एक अठोत्तरी, राखै सन्त प्रवीन॥ ३९ ॥
अधिक मिलै त्यागतरहै, ममता बढ़न न देइ।
रटै नाम सियराम नित, गुरुपद पंकज सेइ॥ ४० ॥
लोकलाज छल कपट मद, दम्भ द्वेष पाखण्ड।
मान मोह लोभादि तजि, विचरै अवनि अदण्ड४१
निन्दा अस्तुति जानि सम, दुख सुख काया भोग।
चिन्तहिं आतम रूपनिज, प्रेमलता सु असोग॥४२॥
आशा तृष्णा त्राश ना, रटत स्वास प्रति नाम।
दुखहु देत दुखवत नहीं, काहुइ सो सुखधाम॥४३॥

रसिक भाव दृढ़ टेक उर, भूलि न चलत कुपन्थ।
करहिं सजाती सङ्ग शुचि, कहहिं सुनहिं सद्ग्रन्थ ४४
क्षमासील शुचि सरल गति, रत सियराम सुनाम।
दाम बाम दुखधाम सम, जानत जगत तमाम ॥ ४५॥
बोलहिं बचन बिचारि करि, भाव न बादाबाद।
रटहिं अधिक सियराम मुख, रहहिं भरे अहलाद।४६।
ते घर तजि सुख सञ्चहीं, रहहिं फैल ते फर्क।
फक्त फकीरी जक्त तजि, करहिं मुदित तजि तर्क।४७।
सबसन राखहिं मेल पुनि, बिलग रहहिं ज्यों अर्क।
रटहिं नाम दृढ़ नेम धरि, निशिदिन ततसुख गर्क।४८।
धाम बाम तजि मातु पितु, जेहिलगि भयो फकीर।
सो न बनी करनी कछू, बैठ्यो बाँधि कुटीर ॥ ४९ ॥
जो त्यागो पाग्यो तेहि, लियो थूकि जनु चाटि।
करत कसाइन के करम, बेष फकीरी ठाटि॥ ५० ॥
लेनदेन खेती बनिज, झूठ प्रपञ्च विवाद।

करत मर्‌यो हमहम अधम रूच न पायो स्वाद ॥ ५१ ॥
खर्चहिं द्रव्य कुमार्ग में सेवहिं नारि पराय ।
लरहिं मुकदमा ठानि हठ, सठ परलोक नशाय ॥ ५२ ॥
प्रेमलता कहु कौनसुख, लह्यो छाँड़ि गृह सोइ ।
फँस्यो कीरइव सहत दुख, पुनि पछितैहै रोइ ॥ ५३ ॥
उभय लोकते विमुख भा, इन्द्रिनि के हित लागि ।
भजत न श्री सियरामकहँ, रह्यो बिषय सुख पागि ॥ ५४ ॥
ग्रह ते चलि अरुझै नहीं, बिच बिच लहिधन धाम ।
सो पहुँचै सियरामपुर, प्रेमलता रटि नाम ॥ ५५ ॥
अस्थानादिक जाल बहु, राखे रुचिर बनाइ ।
पियपुर के पन्थी बिपुल, रहहिं सन्त अरुझाइ ॥ ५६ ॥
करै फकीरी ठानि हठ, तजि सठता धन धाम ।
सावधान रहि दिवसनिशि, रटै नाम सियराम ॥ ५७ ॥
नामजापकनि के चरण, सेवै भाव बढ़ाय ।
कहैं करै सोइ शीस धरि, प्रेमलता हरषाय ॥ ५८ ॥

पावै सीथ प्रसाद शुचि, चरणोदक करि नेम।
रटै नाम सियराम नित, उपजै अनुपम प्रेम॥ ५९॥
युगल उपासक रसिक जे युगल नाम लयलीन।
विरले विरले पाइये, प्रेमसुलता प्रवीन॥ ६०॥
मागि खात माधूकरी, वीतराग मतिमान।
श्री सियराम अनन्य मुख, रटहिं नाम नहिं आन॥६१॥
इष्टधाम मधि विचरहीं, रँगे नाम रस रङ्ग।
प्रेमलता मनकाम प्रद, तिन्हिकर सेवा सङ्ग॥ ६२॥
सोवत जागत चलत अरु, बैठत उठतौ खात।
जिन्हिके श्री सियराम गति, केवल अपर न बात॥६३॥
ते बड़भागी सन्त जग, रामरूप सुखधाम।
जेन केन विधि उदर भरि, रटहिं निरन्तर नाम॥ ६४॥
सन्तन सीथ महात्म्य शुचि, अरु प्रदीप वैराग।
पाठ करै नित उर धरै, जे तिनके बड़ भाग॥ ६५॥

इति श्री सीथ प्रसादी माहात्म्य तथा वैराग प्रदीपनी।
परमहंस श्री १०८ श्रीसियालाल शरण जी महाराज
उपानाम श्री प्रेमलता जूकृत समाप्त शुभम्॥४॥

अथ श्री अनन्यसतक प्रारंभ।

दोहा।

श्री गुरु सीताराम पद, वन्दि सु नाम मनाय।
रसिक अनन्य सु सन्त मत, लिखौं लखत भ्रम जाय।१।

सूपनखा रामहिं चह्यो, जनकसुतहिं परित्यागि।
नाक कान काटे लखन, प्रेमलता तेहि लागि।२॥

रावण रामहिं तजि भज्यो, सीतहिं उर हठ ठानि।
प्रेमलता तेहि लगि भयो, बंश सहित हित हानि॥३॥

सियबिनु राम न रामविनु, सीता यह जिय जानि।
युगल रूप सेइय सदा, प्रेमलता उर आनि॥४॥

सिय बिनु जो नर रामहीं, भजै बचन मन काय।
विप्र बधे कर दोष तेहि घटे प्रभुहिं विमुखाय॥५॥

सोरठा ।

सिय बिनु आधे राम, तेज हींन ज्यों चन्द्र दिन ।
कबहुँ न जनमन काम, पूरहिं भजिय जो जन्म सत ।६।
सिययुत पूरण राम. सबही विधि सब कहँ सुखद ।
सकल कला गुण धाम, राकहिं लहि जिमि पूर्ण शसि ।
द्रवति रामबिनु सीय, यद्यपि सेवत ताहि पर ।
तदपि रहति बिनुपीय, प्रेमलता स्वामिनि दुखी ॥८॥
यद्यपि सीय स्वतन्त्र, रहति सदा केहु बश नहीं ।
राम प्रेम को मंत्र. प्रेमलता पढ़ि कीन बश ॥ ६ ॥
सिया पिया दोउ एक, विकल होत इक एक बिनु ।
यह विचारि धरि टेक, प्रेमलता दोउ भजिय नित ।१०।

दोहा ।

रटिये श्री सियराम मुख, सेइय श्री सियराम ।
बसिये मिथिला अवध नित, सुनिये चरित ललाम ।११।
देश देश जनि बागिये, जागि त्यागिये मोह ।

नामरूप अनुरागिये, प्रेमलता तजि द्रोह ॥१२॥
निज घर तजि घरघर फिरत. सेवत देबी देव ।
भजत न होइ अनन्य तेहि, शिव बिरंचि जेहि सेव ॥१३॥
बंचक भक्ती करत नर, प्रभुहित देत न शीश ।
देश देश घर घर फिरत, घर तजि काढ़त खीश ॥१४।
यदपि सहत दुख तदपि नहिं, लाजत रंच गमार ।
रटत न बैठि इकन्त मुख, युगल नाम सरकार ॥१५॥
बिनहिं प्रेम मन लगेउ विनु, रटत नाम करि नेम ।
पावत परमानन्द जन, सबसुख मंगल छेम ॥१६॥
बिनुश्रम आवत सकल गुण, नामी के उरधाय ।
अचल होत मन क्रम बचन, ज्योंजल जलनिधिपाय १७
बहु बोलब डोलब वृथा, मिटत रटत सियराम ।
प्रेमलता पावत परम मन क्रम बच बिश्राम ॥ १८ ॥
कहवावहिं सियरामकर, शरण दास जग माँहिं ।
याचत धनिक कुदेवतनि, सेवत उर न लजाँहिं ।१६।

श्रीसियराम समान प्रभु पाइ भजहिं जे आन ।
प्रेमलता ते मन्दमति, पशु बिनुपूँछ बिषान ।२०।
गुणनिधि सुखनिधि शीलनिधि, कृपाशिन्धु सर्वज्ञ।
शरणपाल आरतिहरण, सर्वोपरि सुकृतज्ञ ॥ २१ ॥
नाम रूप गुण धाम चहुँ, जिन्हिके परम उदार ।
परम सुलभ शुचि सर्व हित, सुखद सरल श्रुतिसार२२
अभिमतप्रद हित हेतु बिनु, हरण सकल श्रम रोग।
प्रेमलता तेहि तजि भजहिं अन्य कुदेवनि लोग ।२३।
पराधीन त्रिभुवन सकल, सुर मुनि मनुज जितेक ।
सुख चाहत तिनके शरण, रहित जे ज्ञान विवेक ।२४।
सेइय सुदृढ़ बिचारि करि, श्रीसियराम परेश ।
गाम गाम जनि भटकिये, अटकिय गुरु उपदेश॥२५।
सुन्दर आयू जात यह, अब अब करत गमार ।
प्रेमलता चितचेत करु, भजु सियराम उदार॥ २६ ॥
एकै ते सु शनेह करु, गणिका पन तजि भाइ।

सुख दुख निन्दा अस्तुति, होइ न उर घबराइ॥ २७॥
कितनेउ होइ उपाधि तउ, रुचौ चित न डुलाउ।
भजनपन्थ चढ़ि उतरु जनि, तब रीझहिं रघुराउ२८
सत्य सती ज्यों चढ़त सर, मुये पतिहिं लै सङ्ग।
त्रिभुवनपद पायेउ नहीं, करति अपन प्रण भङ्ग॥२६॥
त्यों सियराम उपासक, कोउ २ सन्त सुजान।
शिरउ कटे नहिं तजत निज, रेक टेक गुरु ज्ञान॥३०॥
रोमरोम आवै विघन, कोटि कोटि बिकराल।
प्रेमलता डोलत नहीं, सुमिरत नाम कृपाल॥ ३१॥
ज्यों ज्यों सहतकलेश जन, त्यों त्यों होत अडोल।
तपत अनलमहँ हेम जस, तस तस बाढ़त मोल॥३२॥
श्रीसियराम अनन्य जे, युगल उपासक खास।
बरणौं तिन्हिकर चिन्ह कछु, निशिदिन रहत हुलाश॥
तिलक रामरज कर सुभग. पीत सु विन्दु समेत।
पञ्च सुमुद्रा कंठिगर. धारण करहिं सचेत॥ ३४॥

युगल युगल सब मंत्र अरु, युगल रूप युग धाम।
सावधान सेवहिं सदा, रटहिं नाम बशुयाम॥ ३५॥
पीत बसन सनकादि शिर. नयननि अञ्जन श्याम।
सखी भाव तत्सुख सुखी, अनुरागी गुण ग्राम॥३६॥
बादरहित शुचि संत प्रिय, निजपर रूप सु ज्ञान।
दम्पति गुण गावहिं गुणहिं सुनहिंन चरचा आन॥३७॥
पञ्च प्रकार अनन्यता, रूप, सु गुण, रु प्रसाद।
सेवा रस, इति सुदृढ़ उर. धारहिं हरण विषाद॥३८॥
नवहिं न काहुइ इष्ट विनु. निन्दत काहुइ नाहिं।
पूजहिं आन न आनकर, सीथ प्रसादी खाहिं॥ ३९॥
कहनि रहनि समुझनि चहनि, मन बच कर्म सु टेक।
सियरघुनन्दन पद कमल, प्रेमलता गति एक॥ ४०॥
युगल उपासक विनु न निज, आशय करहिं प्रकाश।
फणि मणि इव जुगवत रहहिं, प्रेमलता रस रास॥ ४१॥
आन उपासक ते न बहु. करहिं बतकही प्रेम।

संग सजातिनि कर चहहिं, प्रेमलता प्रद छेम ॥४२॥
लोक रिझाऊ करत नहिं, भक्ति ज्ञान वैराग ।
प्रभु अनुकूलसु रहहिं, नित, करि प्रतिकूलहिं त्याग ।४३
गुरु प्रभु सन्तनि के निकट, रहहिं न होत सुतन्त्र।
परिहरि मनमुख आचरण, जपहिं नाम युग मन्त्र ४४
सारासार विबेक उर, भक्षा भक्ष न खात ।
मारग चलहिं निहारि महि. कहहिं रसीलो बात ॥४५॥
प्रथमकाल जागहिं सदा, रटहिं नाम करि सोर ।
चिन्तहिं चरित सुविमल मन. जब लगि होतन भोर ४६
करहिं उचित उठि हर्षि पुनि, प्रभु सम्बन्धी काज।
टहल महल की भाव युत, मुख सियराम बिराज ।४७।
पावहिं वस्तु निहारि सब,नीर पियहिं नित छानि ।
दम्भ कपट छल मान गत, अनुचित करहिं न जानि।
सन्त सीथ में प्रीति अति, निष्कामी निर्मोह ।
प्रेमलता परमारथी, परानन्द संदोह ॥ ४९ ॥

नीमानन्दी गौड़िया, विष्ण श्वामी सन्त ।
करहिं गोपिका रज तिलक, भजहिं राधिका कन्त ५०
आचारी रामानुजी, रहहिं अचार समेत ।
मैलकोट की रेणुकर, करहिं सु तिलक सफेत ॥५१॥
रामानन्दी वैष्णव, जो सियराम अनन्य ।
चित्रकूट की रामरज, धारण करहिं न अन्य ॥५२॥
अङ्ग उपाङ्गनि सहित नित, करहिं सु तिलक सम्हारि।
सूचित होत उपासना, तिलक स्वरूप निहारि ॥५३॥
तिलक बिभूषण रहित सब, धारण करहिं अयान।
तेहि लगि होत न बिमल उर, प्रेम भक्ति विज्ञान ॥५४॥
श्री आनन्द सु संहिता, मध्य आठ अश्लोक ।
शिव गिरिजा सम्बाद तेहि, अवलोकहु तजि शोक॥
श्री गुरु कृपाकटाक्ष ते, मैं पायेउँ अनयास ।
समुझौ तिन्हिकर अर्थ यह, जो अनन्य जनखास ५६
ऊर्द्धपुण्ड्र के मध्य श्री, विन्दु चंद्रिका होइ ।

दोउ दिशि मुद्रिक नाम युग, तिलक कहावत सोइ ॥५७॥
लालबिन्दु श्री चन्द्रिका, युगल नाम दोउ ओर ।
सिंहासन सह मुद्रिका, मुख्य तिलक चित चोर ॥५८॥
बिन्दु चंद्रिका नाम अरु, मुद्रिक तिलक श्रृँगार ।
धारण करहिं सु सन्त नित, निन्दहिं मूढ़ गमार ॥५९॥
श्री सिय आयुध रूप अरु, नाम मंत्र विनु राम ।
द्रवत न कबहूँ करिय किन, कोटि यतन वशुयाम ॥६०॥
जबलगि उर बाढ़ति नहीं, राम भगति सुखखानि ।
सिय आयुध तवलगि नहीं, धारहिं जन मुद दानि ६१
पञ्च सु अङ्ग उपासना, संसकार पुनि पाँच ।
पंच सु मुद्रा हींन सब, भजन भावना काँच ॥ ६२ ॥
भर्महिं जीव अनेक युग, बिनु सतगुरु उपदेश ।
भजन भाव प्रभु तत्व गत, पावत विपुल कलेश ॥६३॥
ते का जानहिं भेद यह, रसिकन कर अज्ञान ।
जल्पहिं कल्पित बचन बहु, निन्दहिं वेद पुरान ॥६४॥

करहिं न तिन्हिकर सङ्ग ते, जे जानहिं प्रभु तत्व।
रहहिं इकन्त प्रपंच तजि, चिन्तहिं इष्ट परत्व। ६५।
महाराज गुरुदेव सन, पाइ भली बिधि मर्म।
अभय भये विचरहिं अवनि, प्रेमलता गत भर्म।६६।
गरे गूदरी टोप शिर, रटहिं सु नाम अभंग।
करहिं रामरज कर तिलक, भूषण सहित सुढंग।६७।
पञ्चसुमुद्रा प्रेम युत, छापहिं नित प्रति अङ्ग।
मालाकार जनेउ गर, कंठी युगल सुरङ्ग॥ ६८॥
मागि खाँयँ माधूकरी, रटहिं खूब सियराम।
रहहिं मुदित मन ऊब तजि, मिथिला अवध सुधाम॥६९॥
संग्रह त्याग न करहिं अति, कहहिं सुनहिं सदग्रन्थ।
आचारज कृत मार्ग जो, चलत सदा तेहि पन्थ॥७०॥
प्रभु सन्तनि हित भीखहू, मागत में न लजाँहिं।
सबकर हित चाहहिं सदा, दुखवत काहुइ नाँहिं॥७१॥
परम अकिंचन नीतिरत, शील शरल सुखदाय।

अनायास जो मिलत धन, तेहि छन देत उड़ाय ॥७२॥
निज तन हित भूषण वसन, जस तस पाइ अघाँहिं।
प्रभु सन्तनि हित नीकहू, अर्पन करत लजाँहिं ॥७३॥
सन्त गुरुनि के सीथ शुचि, ओड़ि उभय कर लेत।
हर्ष सहित कृत कृत्य ह्वै, पावत प्रीति समेत ॥ ७४ ॥
प्रभु गुरु सन्तनि के निकट, कहहिं न अनुचित वैन।
बोलहिं तौ अति प्रिय मधुर, नीचे करि दोउ नैन ॥७५॥
थोरे महँ सन्तोष उर, चहहिं न बहु बिस्तार।
मरनेपर निश्चय सदा, विगत मोह मद मार ॥ ७६॥
निजतन कर. सब कृत्य निज, करहिं जहाँ लगि बूत।
प्रेम नेम प्रभुपद कमल, बढ़त जाय नित नूत ॥७७॥
भावसहित जो करत कोउ, सेवा आर्य सु जानि।
भावति सो प्रभु हीय में, लेत प्रेम पहिचानि ॥७८॥
विसरिजात अपराध पर, निज उपकार समेत।
तिरस्कार कहुँ होइ तउ, अपनहिं अवगुन लेत ॥७९॥

मायिक जिते पदारथ, जहँ लगि लोकालोक।
पायेउ होत न हर्ष उर, गये न मानहिं शोक ॥८०॥
प्रभु इच्छा जुगवत रहहिं, निज मन गति करि दूरि।
प्रेमलता अनखात नहिं, पायेउ प्रभुता भूरि ॥८१॥
सदा एक रस विरति वर, युगल नाम लयलीन।
मूरख से घूमत जगत, भजन सु पन्थ प्रवीन ॥८२॥
कहहिं न तत्व बखानि निज, सुनहिं न परमत बात।
रटहिं सुनाम सनेम मुख, निशिदिन हर्षितगात ॥८३॥
जो कोउ जन आवैं निकट, जिज्ञासू करि हेत।
तासुबचनसुनि समुझि उर, उचित सिखावन देत ॥८४॥
बकबादिनिते मौन गहि, बैठहिं मन मुख फेर।
बकि२ आपइ जात उठि, कहिकछुबचन करेर॥८५॥
धनिकन की परवाह नहिं, दीन जनन पर प्रीति।
प्रेमलता राखहिं सदा, शुचि सन्तनि की रीति ॥८६॥
नाम भरोसो एक उर, भली भाँति दृढ़ कीन।

सब प्रकार लखि इष्ट निज, तिनहिं अपनपौ दीन ।८७।
खात पियत सोवत जगत, बैठत उठत परात ।
श्रीसियराम सु नाम बिनु, अपर न कछू सुहात ॥८८॥
नाम समान न सुखद कोउ, रूपन लीला धाम ।
वेद कथित साधन अखिल, यदपि सकल गुणग्राम ।८६।
नामाधीन स्वरूप सब, वरणहिं वेद पुरान ।
सुलभ होत अति अगम अपि, नाम लिये अवसान ।६०।
तुष्टहिं सब नामहिं रटत, रूप जिते अधिकाय ।
श्रमबिनु सींचत मूलजिमि, डारपात हरिआय ॥६१॥
असबिचारि नामै रटै. हटै न कौनउ काल ।
राम उपासक ते असल, मुदित रहै हरहाल ॥६२॥
कहुँ कोउ न्योति मधूकरी, देत बुलाइ सम्हारि ।
ब्यञ्जन बिविधि प्रकार के, प्रेमलता सतकारि ॥६३॥
अनायास कहुँ देत कोउ, ऐन बखत पर आय ।
दधि चूरा वा चूरई, पावत नीर भिजाय ॥ ६४ ॥

कहुँ कोउ बूझत बात नहिं, मागि खात कहुँजाय।
मिलत कबहुँ मागेउ नहीं, तब बैठहिं गमखाय ॥६५॥
रटहिं नाम पै मुदित मन, होत न कबहुँ उदास।
प्रेमलता रस एक नित, सजि नूतन विश्वास ॥६६॥
जेहि तेहि विधि निर्बाह करि, रटहिं नाम करि नेम।
जगनिन्दा उपहास सहि, पावहिं ते पर प्रेम ॥६७॥
अधिक मिलत कहुँ उदर भरि, कबहुँ थोर कहुँनाहिं।
कहुँ मान अपमान कहुँ, यहिबिधि निशिदिनजाहिं॥६८
कहुँमटिया चटिया कहूँ, कहुँ खटिया पर सैन।
कहुँ कटिया खासा कहूँ, फटिया बसन मिलैन॥६६॥
कहुँ लटिया तनु थूल कहुँ, घटिया वल ब्योहार।
प्रेमलता नटिया नहीं, रटिया नाम उदार॥१००॥
सटिया प्रभुपद फिर नहीं, हटिया भटिया सोइ।
छटिया जग सम्बन्ध महि, अटिया संशय खोइ॥१०१॥
रति मति गति बर विरति अरु, भक्ति सदा रस एक।

निवहै करहिं सु आचरण, प्रेमलता सविवेक ॥१०२॥
बहुरूपी नट भाँड़ अरु, गणिका पण करिदूरि ।
प्रेमलता रस एक रहि, रटहिं नाम सुखमूरि ॥१०३॥
बायस बगुला वृत्ति तजि, उर मराल गति धारि ।
रटहिं नाम सियराम नित, प्रेमलता मन मारि ॥१०४॥
जन अनन्य महिमा अमित, सियवरते अधिकाय।
जिन्हिके बश प्रभु रहत नित, करहिंजो तिन्हैं सुहाय १०५
तिन्हिके गुणगण विमल कोउ, कहै कवन विधिगाय ।
कहे कछुक मन बोधहित, प्रेमलता हरषाय ॥१०६॥
छमा करहिं सब चूक मम, जन अनन्य सियराम।
प्रेमलतहिनिज बाललखि, दैहैं रटना नाम ॥१०७॥

इति श्री जय सियराम जयजय सियरामनाम ध्वनिप्रचारक
श्री वैष्णव धर्मावलम्बी परमहंस श्री १०८ श्री सिया-
लाल शरणजी महाराज उपनाम श्री प्रेमलताजू
कृत श्री अनन्य सतक समाप्तम् ॥५॥

॥ अथ श्रीनाम स्तुति प्रारम्भः ॥

छन्द ॥ १ ॥

जय जयति श्रीसियराम नाम अकाम जनमन रञ्जनम्
जय जयति सब सुखधाम पूरण काम भव भय भञ्जनम्
जयजयतिअशरणशरणअभरणभरण अघदल गञ्जनम्
जय जयति मानसमलिनके प्रभु अमल अनुपमभञ्जनम्
जय जयतितारण तरण कलिमल हरणमोद बढ़ावनम्
जय जयति ब्रह्मपरेश परतम सेव्य अग जग पावनम्
जय जयति आनँदकन्दमति भ्रम फन्द द्वन्दनशावनम्
जय जयति जनगुणप्रगटकर अपराधअवगुणदावनम्
जय जयति श्रीमहराज साहब नाम सबबिधि लायकम्
जय जयति बारकजपत जीवनिसकलअभिमतदायकम्
जय जयतिरबिशसिअनल कारण कार्यपर निर्मायकम्
जय जयतिईश्वर ब्रह्म निर्गुणसगुण सुर मुनि नायकम्

जय जयति अचल प्रताप चहुँयुगकालतिहुँ कलराजतम्
जय जयतिनामनिशाननिर्भयसकलदिशिनितबाजतम्
जयजयति जापकनामकेजिन्हिनिरखियमगणभाजतम्
जयजयतितिन्हिसियलालनामसुशरणहोत न लाजतम्

दोहा ।

जय करुणाकर प्रणत हित, समरथ स्वामी नाम ।
जय उदार रट देउ निज, प्रेमलतहि बशुयाम ॥ १ ॥

छंद ॥ २ ॥

जय नामनमामीसरल अकामी समरथस्वामी परधामी
जय परमप्रतापी त्रिभुवनब्यापीअगमअलापीगतिनामी
जयसदगुण सागरसबबिधिनागरमतिआगरअन्तर्यामी
जय अधम उधारण भवभयटारन पावहिंपारननरबामी
जय ब्रह्मशिरोमणिमहिमाधनि रगावतभनि रमुनिझारी
जय जन सुखदाई प्रभु प्रभुताई अमिट बड़ाई बिस्तारी
सियराम सुनामीतव अनुगामीअग जगस्वामीअवतारी

जयअद्भुतकरणीकृत अघहरणीजायनबरणीमुदकारी
जयसंश्रृतिनाशकसुयशप्रकाशकखलदलत्राशकश्रलवाना
जयनाम कृपालादीनदयाला हरु जग जाला मदमाना
जयऋधिशिधिदाता गुरुपितुमातातुम्हसमत्रातानहिंआना
जयअशुभसुभावनप्रदपदपावनश्रमिटमिटावनदुखनाना
जय जय निरहेतू हित भवसेतू धर्म निकेतू बरदानी
जयजय सब भाँती सुलभ सँघातीसुहृदसजाती विज्ञानी
जय करुणाकन्दानिर्मलचन्दालहतअनंदालखिध्यानी
प्रभु प्रेमलताके नाम सुसाके बरणत थाके कबि मानी

दोहा ।

बिधि हरिहर गणपति गिरा, शेषादिक कबि वृन्द ।
प्रेमलता श्रीनाम यश, थके कहत रघुनन्द ॥ १ ॥
श्री सियराम सु नामकी, महिमा अकथ अपार ।
प्रेमलता को कहि सकै हारेउ जब करतार ॥ २ ॥

इति श्रीनाम स्तुति समाप्त ।

श्री स्वामी श्री सिया लाल शरण जी महाराज

सिया रघुनाथ शरण कृत ।

सवैया ।

श्री—सियस्वामिनि केरि सखी रसएक सदा बयवर्षइगारा
स्वा—मिनि आयसु धारिहिये श्रीप्रेमलता जगमेंअवतारा
मी—तसबै प्रिय प्राण समान सुजान अमान महान उदारा
श्री—सियरामसुनाम उपासक आशक अहलरटैं निशिबारा
सि—द्ध प्रसिद्ध तपी गुणवन्त छमी सुदमीरु अकाम अगेही
या—द सदा निजनाम स्वरूप इकन्तनिवास दशा सुबिदेही
ला—जबिहाय करैंनिजकाजहि नाम रटैं शुचि सन्तसनेही
ल—क्षण जो श्रुति सन्तनके सुबसैं इन्हमाहि न जानतकेही
श—रणागत पालकज्योंपितुबालक देहिसुबुद्धि कुबुद्धिनशाई
र—टवावहिं नाम बसावहिंधामहटावहि कामकलंककषाई
ण—व षष्ट दशाष्टरु चारि के सारयुगोंकेसुधर्महिंदेहिंलखाई
जी—व सुकौल गुरूके सुवाक्य बिचारि करैं नित नामरटाई
म-हिमातिन्हिकीकबिकौनकहैजिन्हिनामरसामृतपानकिया
हा—रहिं शेष गणेश महेशसु सारद नारद आदि हिया
रा— महिंभक्तविशेषकह्योजिन्हिनाममहामणिधारिलिया
ज—गधन्यसु' मंजरिप्रेम'वहीअसनामिनिचर्णसुधोदपिया